भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 05 | उदयपुर बुधवार 15 मार्च 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

'जगविलास' में वर्णित मेवाड़ की संस्कृति का काव्य वैभव

- डॉ. राजेन्द्र नाथ पुरोहित -

मेवाड़ के महाराणा जगतसिंह द्वितीय (1734-1751) के आश्रित कवि नन्दराम ने वि.स 1902 में 'जग विलास' काव्य की रचना की। उक्त ग्रन्थ वर्तमान में राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान उदयपुर शाखा के संग्रह अन्तर्गत अधिग्रहण क्रमांक 2216 पर प्रविष्ट है। महाराणा जवानसिंह के पठनार्थ वि.स 1878 में इसकी प्रतिलिपि तैयार की गई। ब्रजभाषा में रचित तथा 404 पदों से युक्त यह काव्य साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि का होने के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें महाराणा जगतसिंह (द्वितीय) की दिनचर्या, राजसी वैभव, राजप्रबन्ध तथा जगनिवास महल के प्रतिष्ठा उत्सव का विषद वर्णन है। इसका प्रारम्भ गणेश एवं सरस्वती स्तुति से है-

श्री लम्बोदर समरि सदा, मंगल सुख कारिम।
अति प्रचंड भुज डंड सुंड सोहत उनति भारिय।।
एक दंत मयमंत संत सेवक सुखदायक।
गुन पूरन गुन गेह गुन सुदाता गुन नायक है।।
बहु रिद्धि सिद्धि नव निधि कर सुन्दर संकर सुत सरस।
अति बुद्वि दियन दिये सुबुद्धि तो किए जगते सजस।।
श्री सरसति दीजें सुमति कीजें बुद्धि विसेस।
पावुं वर वदाईनी गाऊं जस जगतेस।।

इसका आखिरी छप्पय इस प्रकार है-

जगनिवास जग न रांन कियो महरत सुखकारिय।
कविजन परिगह तिन्है दुई तब रीझ सुमारिय।।
भोजन विविध प्रकार गोठ है भई तहां तब।
अन धन बसन अपार दये जग रांन बाज जब।।
सब देस सुबस आनन्द अति कहत नन्द बानी सरत।
जगतेस रांन संग्राम सुत चिरंजीवो कोदिक बरस।।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में पिछोला झील का ऐतिहासिक वर्णन करते 'जगमन्दिर' महल को शाहजादा खुर्रम की शरणस्थली कहा है। यह घटना महाराणा कर्णसिंह के काल (1620-1628) में घटी। जगनिवास महल का प्रथम मुहूर्त वैशाख शुक्ल 10, वि.स. 1799 को हुआ।

डोडिया ठाकुर, सरदारसिंह के अभिदर्शन में 35 माह इसके निर्माण में लगे। इसका वास्तु मुहूर्त एक फरवरी 1746 सोमवार को हुआ। काव्य में, प्रतिष्ठा उत्सव के ब्रह्ममुहूर्त से दूसरे दिन समापन तक का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है।

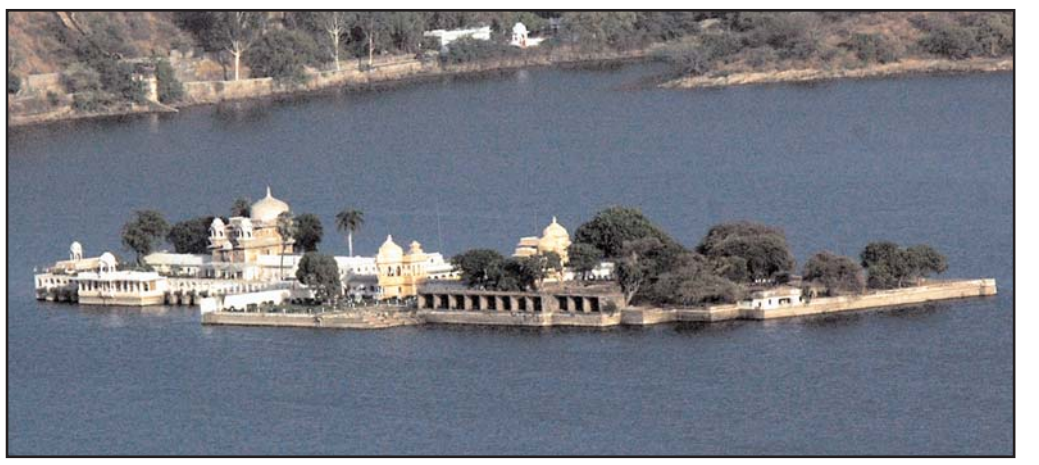

महाराणा की दिनचर्या का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा- महाराणा ने प्रात: 4 बजे जागृत होकर अमर विलास (बाड़ी महल) में पूजा सम्पन्न की। सेवा, संध्या, नाम-जप के बाद राजपुरोहित संतोषराम तथा अन्य ब्राह्मणों के सान्निध्य में भट्ट देवराम से वेद पाठ सुना। धूप, दीप, नैवेध के पश्चात ब्राह्मणों को दक्षिण प्रदान की। शोभायात्रा हेतु प्रस्थान करने के पूर्व महाराणा ने जामा अंगरखी, कमरबन्दा धारण करने के पश्चात सिर पर तुर्री, छोगा, कलंगी युक्त पगड़ी, पाँव में मौजड़ी तथा गले में मोती, माणक, पन्ना, तथा हीरे की विशाल माला एवं हाथों में पोहूँचिये आदि आभूषण पहने। शोभायात्रा के अन्तर्गत छत्र, चंवर, जहांगीर, मोरछल, हाथी, घोड़े आदि शाहीलवाजमें के साथ जगन्नाथराम मन्दिर पहुँच ध्वजादण्ड समारोह को सम्पन्न किया। मुगल आक्रमण के दौरान विध्वंस के पश्चात हुए इस मन्दिर का जीर्णोद्वार करा प्रतिष्ठा सम्पन्न की।

पिछोला झील के तट पर पहुंचने पर महाराणा नाव पर सवार हो जगनिवास महल पहुंचे। झील के चारों ओर जन का मुजरा झेलते मंगलकामना की। नवनिर्मित प्रासाद के झरोखे में प्रथम सिद्ध मुहूर्त सम्पन्न हुआ। महाराणा के समीप राज राघवदेव तथा भाई नाथसिंह बैठे। नृत्य-गान का आयोजन हुआ। नर-नारी सुरीले कण्ठों से गीत प्रस्तुत करने लगे। नट-गंधर्व, वेश्याएँ तथा कलावंत अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे थे। परिजन, सेवक, सरदार, चारण तथा भाट महाराणा को नजर नछरावल प्रस्तुत कर रहे थे। चारणों, माटों तथा कवियों ने महाराणा को आशीष दी। महाराणा ने सभी को सिरोपाव तथा आभूषण दिये। सरदारों को अश्व प्रदान किये गये। अश्वों के नाम धतलबाड़ा, हरबख्शनीला, दिलमालक, बाजबहादुर, चौगानबाज, तेजबहादुर तथा दिलमाल थे।

मेवाड़ की सामंती व्यवस्था का वर्णन करते हुए कवि ने झाला, चौहान, परमार, डोडिया, सारंगदेवोत, शक्तावत, चूण्डावत आदि सरदारों के नामों का उल्लेख किया। इन सामंतों में राज राघवदेव तथा भाई नाथसिंह को महत्त्वपूर्ण सरदार बताया। महाराणा द्वारा रावत लालसिंह को भैंसरोड़गढ़ की जागीर का पट्टा प्रदान किया। दरबार की बैठक व्यवस्था के अन्तर्गत पंक्ति में प्रथम श्रेणी के सरदार, महाराणा के भाई पुत्र, द्वितीय श्रेणी तथा तृतीय श्रेणी के सरदारों के क्रम के साथ दरबारी शिष्टाचार के अनुसार छड़ीदार ने 'जुहार' उद्घोषित किया। कवि ने मुत्सदी (अधिकारी) वर्ग के प्रसंग में छड़ीदारों का दरोगा, पंचोली, मसाणी, कायस्थ, पानेरी तथा पाण्डे आदि पदों की सेवा एवं कर्त्तव्य पर समुचित प्रकाश डाला है।

प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आयोजित भोज का वर्णन करते हुए कवि ने शाकाहारी तथा मांसाहारी व्यंजनों का विवरण प्रस्तुत करते शाकाहारी मिष्ठानों में घेवर, लाखनशाही, लड्डू, जलेबी, फेनी, खाजा, खुरमा तथा अकबरी गुंजा को उल्लेखनीय बताया। सुअर, मृग, बकरा तथा मछली के मांस से निर्मित मांसाहारी व्यंजन भी परोसे गये। कवि ने जगनिवास महल में लहलहाते गुलाब, कदली, चंपा के पौधों का वर्णन करते हुए इनकी तुलना ब्रज के कुंज से की। महल के स्तंभ, बुर्ज, द्वार, नहर, दरीखाना, महराब आदि की स्थापत्य विषयक विशेषताओं को दर्शाया गया है। इनमें आमरवास, खुशमहल, दरीखाना तथा बड़ा चेबचा पर मेवाड़ की स्थापत्य कला पर मुगल-प्रभाव है। दूसरे दिवस राजपरिवार की महिलाओं के निमित्त जगमन्दिर में उत्सव आयोजित हुआ। इस अवसर पर राजपरिवार की राजदादी, राजमाता, रानियां, कुंवरनियां तथा ठकुरानियां उपस्थित हुईं। राजपरिवार की महिलाओं का विशद वर्णन जनानी ड्योढ़ी से सम्बद्ध जानकारी के लिये उपयोगी है।

खतरनाक होता है सपनों का मर जाना

कितना खतरनाक होता है
आम आदमी के सपनों का मर जाना।
सपने जो उनकी आंखों में न जाने
कितनी आस लिए मचलते रहते हैं
सोते जागते उम्मीद की एक नन्ही किरण
जो कभी बुझती नहीं है
उन्हीं सपनों का मर जाना
कितना खतरनाक होता है।
आम आदमी को विश्वास है कि एक दिन
आज नहीं तो कल पूरे होंगे उनके सपने
सपने जो अपने लिए अपनों के लिए हर पल
सोते जागते उनकी आंखों में
पानी की धार की तरह बहते रहते हैं
रूकना तो जानते ही नहीं ये सपने
उन्हीं सपनों का मर जाना
कितना खतरनाक होता है।
फुटपाथ पर सोते रेस्तरां की तरफ
ललचाई आंखों से देखते ये बच्चे
ढाबे में जूठे बर्तन मांजते ये बच्चे
उनके भी सपने होते हैं
रिक्शा खींचते ठेला खींचते मेहनतकश
उनके भी सपने होते हैं
एक अच्छी खुशहाल जिंदगी के लिए।
सपनों की गठरी लिये वे
कहां-कहां नहीं भटकते हैं
और उन्हीं सपनों का सत्ता के
निर्मम हाथों कुचल दिया जाना
कितना खतरनाक होता है।
कितना खतरनाक होता है
उनके सपनों का मर जाना
गरीबी की हद में जिनकी बेटी
ब्याही नहीं जा सकी
जिनकी बेटी जालिमों की हवस में
कुचल दी गयी मारी गयी
उनके बेटे जिनके हाथों में कलम की जगह
बंदूक थमा दी गई और वे
आतंकवादी बना दिये गये
उन सबके सपनों का मर जाना
कितना खतरनाक होता है।
कितना खतरनाक होता है
आम आदमी के सपनों का मर जाना।।

-डॉ. उषा वर्मा

पोथीखाना

लोक पर केन्द्रित 'हिमांतर' का हिमालयी लोक

आजादी के बाद लोकसाहित्य एवं कला-संस्कृति पर पूरे देश और विदेश में भी कई तरह की हलचल देखने को मिलती है। विश्वविद्यालयों में भी इस विधा के विविध पक्षों पर अनेकों छात्रों ने शोध कर अपनी गम्भीर रूचि का परिचय दिया है। अनेकों विद्वानों और संस्थाओं ने भी पूरे समर्पित भाव से लेखन-प्रकाशन कर लोक में व्याप्त समृद्ध निधि का संरक्षण किया है। कुछ प्रयोगधर्मी भी बने हैं। पिछड़ों तथा वनजीवियों तक में चेतना के स्वर मुखरित हुए हैं।

इस सम्बन्धी खोज खबर में चुस्ती रखने वालों ने लगातार यह कहा है कि अन्य प्रान्तों की तुलना में राजस्थान इस चेतना में अग्रणी है। यहां तो लोकसाहित्य, लोककला, लोकसंस्कृति नाम से पत्रिकाएं ही प्रकाशित हुईं। उनमें राजस्थान भारती, मरु भारती, परम्परा, रंगायन, रंगयोग, मरुश्री, वाग्वर जैसी पत्रिकाओं ने लोकसम्पदा के अनेक अज्ञात अल्पज्ञात अनछुए प्रसंगों पर जानकारी दी। अन्य प्रान्तों ने भी अपने यहां लोक की तलाश कर उन विधाओं की बाह्य एवं अन्तर्धारा का खोजपरक तुलतात्मक अध्ययन का भाईचारा बनाया।

इन सबके बीच हिमालयी सरोकारों के लिए समर्पित त्रैमासिक पत्रिका 'हिमांतर' का, दूसरे वर्ष का अक्टूबर-दिसम्बर 2022 का यह संयुक्तांक हिमालयी लोक समाज व संस्कृति पर केन्द्रित अंक उत्तराखण्ड की लोकधर्मी परम्पराओं तथा आस्थाओं पर बड़ी मूल्यवान सामग्री लिए है।

अपने सम्पादकीय 'उखेल पाखेल' में डॉ. प्रकाश उप्रेती ने पत्रिका के आशय को स्पष्ट करते लिखा- हमारा यह प्रयास रहा है कि महाकाली से लेकर रामगंगा, अलकनंदा, यमुना और भिलंगना क्षेत्र तक की सांस्कृतिक थाह को संसाधन और सामर्थ्य अनुसार पाठकों के सामने रखा जाए ताकि लोक विरासत के साथ-साथ उसमें हो रहे परिवर्तनों को भी समझा जा सकता है। यह समझ लोकगीतों, लोक उत्सवों, लोक परम्पराओं, मान्यताओं, आस्थाओं और लोकगाथाओं के अध्ययन के जरिये बनती है। इस अंक में लोक के इन माध्यमों को ऐतिहासिक क्रम में देखा गया है।

विशेष बात यह है कि यह अंक अतिथि सम्पादक दिनेश रावत ने बड़ी लगन, मेहनत और महनीयता से संवारा है। उत्तरांचल की लोकधर्मी कला-संस्कृति पर वे लगातार कुछ अर्से से लेखन करते हिन्दी प्रदेशों में हो रहे इस विषयक विद्वानों तथा शोध कार्यों से सम्पर्क किये हैं।

अपनी बात के अन्त में उनकी लिखी यह टीप उल्लेखनीय है- हिमालयी लोक समाज व संस्कृति पर केन्द्रित इस विशेषांक रूपी गुलदस्ते को आपके हाथों में सौंपते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है जिसमें पहाड़ का परिवेश है, गढ़-कुमाऊँ वाला प्रदेश है। लोकपर्व-त्यौहार, उत्सवों का उल्लास है, प्रकृति का मधुमास है। रंगमंच की रंगत और मातृभाषा की मिठास है। प्रकृति प्रदत्त उपादान हैं, गांव की चौपाल, खेत और खलिहान हैं। खानपान-पकवान हैं, परम्परागत परिधान हैं। जीवन के गीत हैं, प्रकृति का संगीत है। पाण्डवों की हुँकार है, देवताओं का चमत्कार है। ढोल-दमाऊ के ताल हैं, लोकनृत्य का कमाल है। इंसानियत के लिए धाद है, नव जागरण हेतु शंखनाद है।

लोकसाहित्य की विविध विधाओं-लोकगीत, नृत्य, नाट्य, आस्था, उत्सव, पर्व जैसे विविध खण्डों में 80 पृष्ठीय सामग्री का यह अंक पहलीबार ही इधर देखने को मिला। लोक अभिव्यक्ति में स्त्री स्वर को लेकर कहा जाता है कि पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की भागीदारी को बहुत कम आंका गया है जबकि गृहस्थ के सारे कार्यों में प्रमुखत: स्त्री की भूमिका स्वीकारी गई है। लोक के सारे रागरंग भी स्त्री की भागीदारी से फलते-फूलते शोभित होते हैं। लोक के रचनाकार के रूप में भी स्त्री अग्रिम भूमिका लिए दर्शित है।

इस अंक में नीलम पांडेय 'नील' ने सबसे छोटे कलेवर मात्र एक पृष्ठ में 'लोक अभिव्यक्ति में स्त्री स्वर' का स्मरण करते अपने अनुभवजनित विश्वास को बड़ी समझ और शालीनता से व्यक्त करते लिखा है- ''एक स्त्री कब गीत व कहानियां रचती है। कब चूल्हे-चौके, जंगल, खेतों में रचे गये उसके गीत जनमानस के गीत बन जाते हैं, उसे पता ही नहीं चलता।

वाद्ययन्त्र व श्रोत्राओं के अभाव में बिना किसी नाम चाह के मात्र अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए खेतों में काम करते हुए, जंगलों में घास काटते हुए, धारे-नौले पर पानी की गागर भरते हुए, महीनों तक ससुराल में रहकर मायके की दिशा निहारते हुए, परदेश गए प्रिय की राह ताकते हुए, वनों में बांज काटते हुए, कभी शारीरिक-मानसिक थकान, कभी जीवन के दु:ख-दर्द, कष्ट और परेशानियों को मिटाने के लिए गाती-दोहराती रहती है वह अपने ही शब्दों में।''

लोकसाहित्य, उस लोक विशेष का एक ऐसा दस्तावेज है जिसके माध्यम से सम्बन्धित लोक की सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक, राजनैतिक व आर्थिक विशेषताओं को जाना जा सकता है। लोक के धर्म और मर्म को बनाये रखने के लिए लोकसंस्कृति और लोकभाषा को जिन्दा बनाए रखना बेहद जरूरी है।

फेस-3, यमुनोत्री एनक्लेव, सेंवलाकला, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित यह अंक आर्ट पेपर पर आकर्षक चित्रालेखों से छपा बड़ा ही मनभावना है। **-म. भा.**

कनक 'मधुकर' के अवदान को याद करते हुए

स्वतंत्रता सेनानी कनक 'मधुकर' राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख पुरोधाओं में रहकर आजीवन गांधीवादी विचारों से प्रभावित रहते पत्रकारिता के माध्यम से जन-जागृति का सिंहनाद करते रहे।

आजादी से पूर्व हरिभाऊ उपाध्याय तथा रामनारायण चौधरी जैसे कट्टर राष्ट्रवादी पत्रकारों से सम्पर्क होते उन्हें राष्ट्रवादी साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली। सन् 1942 के आन्दोलन में वे 14 माह अजमेर की सेन्ट्रल जेल में नजरबन्द रहे।

वहां और भी अनेक साथियों में शोभालाल गुप्त, कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी, चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय जैसों का प्रेरणादायी सहवास रहा। जेल में दैनिक डायरी के माध्यम से उन्होंने बुलन्दी के साथ अपने विचार और क्रान्तधर्मी कविताएं लिखीं।

अजमेर में मधुकरजी ने राजस्थान और रियासती पत्रों में काम करते प्रमुखता से देशी रियासतों में होने वाले आतंक और जुल्मों की खबरें छापीं। माणिक्यलाल वर्मा के साथ रह प्रजामण्डल की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लिया।

अजमेर में 1939 में साप्ताहिक 'नवजीवन' प्रारम्भ किया जो 1942 तक चला फिर उदयपुर में 1944 से 1979 तक लगातार छपता रहा। इसके माध्यम से अनेक साहित्यकार-राजनेता तथा समाजसेवी उनके सम्पर्क में आये।

कनक 'मधुकर' के व्यक्तिव एवं कृतित्व को रेखांकित करते हुए प्रो. मिश्रीलाल माण्डोत ने बड़ी संजीदगी के साथ 'स्वतंत्रता सेनानी कनक मधुकर' पुस्तक का लेखन किया है। इसके छह अध्यायों में एक लेखक, पत्रकार और सम्पादक के रूप में ब्रिटिश दासता से मुक्ति पाने तथा देशी रियासतों के जुल्मों से राहत दिलाने की मुहिम से लेकर प्रजामण्डल आन्दोलन में सक्रिय योगदान देते कनक 'मधुकर' स्वाधीनता के पश्चात राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ विकास कार्यों को आगे बढ़ाने, सामाजिक समरसता बनाये रखने एवं साधनहीन सामाजिकों की आवाज बुलन्द करते उन्हें विकास की धारा का अंग बनाने का, उनके कष्टों को निवारण करने का काम करते रहे।

कहना नहीं होगा कि ऐसे स्वतंत्रता सेनानी कनक 'मधुकर' ने 95 वर्ष की आयु में 10 जून 2007 को सबसे विदा ली।

कुल 80 पृष्ठ की पक्की जिल्द वाली 150 रूपये मोल की यह पुस्तक साहित्यागार, चौड़ा रास्ता, जयपुर से छपी है।

एक पठनीय तथा संग्रहणीय विशेषांक

पिछले तीस वर्ष से प्रकाशित दैनिक अमरावती मण्डल, अमरावती का यह 2022 का दीपावली विशेषांक अनेक दृष्टियों से उपयोगी है। यह विशेषांक प्रारम्भ में 100 पृष्ठों में धर्म-अध्यात्म, साहित्य, राजनीति, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा, समाजसेवा से सम्बन्धित कहानी, कविता तथा वृतान्त की प्रासंगिकता के साथ बड़ी लकदक के साथ निकला है।

इसके अलावा 150 पृष्ठ में कहानी, गजल, व्यंग्य, ललित लेख, बातचीत, नवगीत, नई कविता आदि से सुशोभित है। लगभग हर रचना के साथ रेखाचित्र, कार्टून तथा फोटो चित्रों से उसका आशय झलकता है। सभी रचनाकारों के चित्रों सहित उनकी लेखनी को बड़ी खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया है जो प्राय: अन्य पत्र-पत्रिकाओं में देखने को नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त पूरा अंक ही मोटे आर्ट पेपर पर सबरंगों के साथ दीवाली के दीपकों की तरह झिलमिलाता हुआ बनाया गया है। इस दृष्टि से यह अंक स्थायी महत्त्व के साथ संग्रहणीय बन पड़ा है।

सम्पादक अनिल अग्रवाल ने अपने सभी तरह के सहयोगियों के साथ इसकी सुन्दरतम छपाई, सज्जा से विशेषांक को बड़ा ही आकर्षक एवं नयनाभिराम बनाया है।

साहित्य स्वाद के लिए व्यंग्य की चासनी देती घनश्याम अग्रवाल की ये पंक्तियां -

(1) भ्रष्टाचार तो रामराज्य में भी था वरना रामराज्य जाता ही क्यूं!

(2) कड़े से कड़ा कानून आदमी को बेईमानी करने से रोक तो सकता है पर उसे ईमानदार नहीं बना सकता।

(3) जब सारा देश भ्रष्टाचार के खिलाफ है तब स्साला भ्रष्टाचार करता कौन है?

- डॉ. तुक्तक भानावत

स्मृतियों के शिखर (160) : डॉ. महेन्द्र भानावत

असि-मसि-कसि-कला-संस्कृति के केसरिया देव

राजस्थानी लोकभाषा में ऋषभदेव की विचारणा और चिंतारणा कई रूपों में रही है। जैनों के प्रथम तीर्थंकर के रूप में जहां भगवान ऋषभदेव की विशिष्ट पूजा-अर्चना, मान-मनौती और आग्रह-याचना के प्रसंग मिलते हैं, वहां लोकजीवन में लोकदेवता के रूप में इनकी थरपना के कई पक्ष उद्घाटित हुए पाये जाते हैं।

विभिन्न स्तुतियों, स्तवनों, स्तोत्रों, सज्झायों, विनतियों, बीसियों, चौबीसियों, सिलोकों, ढालों, सपनों, तवनों, लावणियों तथा रासों के माध्यम से भगवान ऋषभदेव की विविध-रूपा वन्दना के बहुआयामी स्वरूप को लोकमंगलकारी परसना देकर यह लोक अपनी अभिव्यक्ति में अभिभूत हुआ लुल्लुल् पड़ता है।

इस लोक ने, ऋषभदेव के आलोक को लोकगीतों के माध्यम से तो लोकचेतना को मुखरित किया ही, प्रकृति और पर्यावरण के हवा, पानी, जंगल, पहाड़, घाटे-घाटी और गुफा धूणियों तक को प्रदीप्त किया है। अपने आत्मानुशासन को धर्म और अध्यात्म का ध्वज देकर भक्तों और भगतों ने ऋषभदेव की ही शरण पकड़ी है। यही शरण उनकी तरण-तारण दु:ख निवारण बनी है। प्रभातियों और वधावों के माध्यम से सूरज की साक्षी में ऋषभदेव की अभ्यर्थना में आत्मशुद्धि का कायाकल्प देकर भोग से योग का आत्मरस दिया है।

अन्य कोई महापुरुष, कोई देवता, कोई जिनेश्वर, कोई लोकेश्वर इतने आदरित और रूपान्तरित नहीं हुए जितने ऋषभदेव हुए। ब्रह्मा के रूप में इनके चोपड़े बांचे गये हैं तो विष्णु के रूप में भी इनके मंगलाचार गाये गये हैं। महेश के रूप में भी इनकी मनुहारें बखानी गई हैं तो आदम के रूप में भी इनकी ओळखाण दी गई है। देवों में देव हैं तो ये। कृषि के देवता हैं तो ये। भूमि के भोमिया हैं तो ये। दिन के करणहार हैं तो ये। ये ही जिनवर हैं। ये ही आदिश्वर हैं। ये ही दीनानाथ और करूणाहार हैं। ऋद्धि-सिद्धि के दातार भी ये ही हैं। इसीलिए ये रकमनाथ हैं और केसर प्रिय होने के कारण इन्हें केशरियाजी एवं केसरियालाल की लोकप्रियता मिली है।

आदिवासियों में इनके काला शरीर होने के कारण ये कालियाबाबा अथवा कालियादेव के नाम से सर्वव्याप्त हैं। इधर मेवाड़ के धुलेव कस्बे में देश का जानामाना ऋषभदेवजी का तीर्थस्थल होने से धुलेवधणी के रूप में भी इनकी बड़ी मानता है। केसरियानाथ की असीम लोकप्रियता से धुलेव कस्बे को गौण कर इस स्थान का नाम भी ऋषभदेव अथवा केसरियाजी हो गया है। धुलेव जैसे इतिहास और पुरातत्व के अध्ययन में जा सिमटा है।

प्रारम्भ में यहां जिनालय था। यह कब अस्तित्व में आया, कुछ नहीं कहा जा सकता। चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी में इसका जीर्णोद्धार हुआ। पूरे देश में यही एकमात्र ऐसा मन्दिर है जहां सब जात-पांत और धर्म-सम्प्रदाय के लोग श्वेताम्बर-दिगम्बर जैन, वैष्णव, शैव, भील एवं पिछड़े प्रतिमा-पूजन-अर्चन करते हैं। प्रतिमा पर कोई लेख नहीं होने के कारण इसकी प्राचीनता के सम्बन्ध में कई कथा-किंवदंतियां प्रचलित हैं।

ऋषभदेव के चरणों में भक्तों की भीड़ बराबर बनी रहती है। कोई कार्य सिद्ध होने पर मनौती पूरी करने आते हैं तो कोई अपने आंगन में पूत की लालसा लिये नूतने आते हैं। देवता सबको देखता है। सबकी सुनवाई करता है। एकबार तो एक तीन वर्ष के बालक के बराबर केसर तोल कर चढ़ा दी गई।

कई लोग झड़ूल्ये, सिर के बाल उतरवाने के लिए अपने बेटे को लेकर आते हैं। झड़ूल्ये उतरवाने की बोलमा बोली जाती है। जब संतान हो जाती है तो पहलीबार भगवान के दरबार में ले जाकर बालक के झड़ूल्ये उतरवाये जाते हैं कारण कि वह संतान इसी देवता की दी हुई होती है और ऐसी मनौती बोली हुई होता है। राजस्थान में ऋषभदेवजी के सर्वाधिक मंदिर हैं। जैसलमेर के लोद्रवा में संवत् दो का प्राचीन मंदिर है जहां की प्रतिमा आज भी पूजान्तर्गत है।

ऋषभदेव के यशोगान में कइयों ने अपनी आत्मीय भावनाओं की अभिव्यक्ति दी है। मुनि आसकरण, गजमुनि, आचार्य अमोलक, ऋषिचंद्रकुशल, घेवर, चौथमल, नवलमल, गजेन्द्र, तेजविजय, रोड़ कवि जैसे कई सुनाम हैं किन्तु इनसे अधिक तो वे नाम हैं जो अनाम बने हुए हैं मगर उनके गीतों की गंगाएं अनवरत लोकसमूह को पावन कर आत्मोद्धार की राह दे रही हैं। 'बोल-बोल आदेश्वर व्हाला कांई थारी मरजी रे म्हांसूं मूंडे बोल' पद हजारों कंठों पर चढ़कर सबओर गूंजित है।

नियमित रूप से ऋषभदेव का सुमिरण जहां पापों का नाश कर जीवन को शुद्धि देता है वहां जन्म-जन्मान्तर के आवागमन से मुक्ति दिलाता है। कई लोग प्रतिदिन सोने से पूर्व और प्रात: उठने पर त्रिदेव नमन के रूप में - 'ऋषभदेव रक्षा करो। शान्तिनाथ साता करो। पारसनाथ पार उतारो। दु:ख-दर्द दूर करो' नाम की माला फेरते हैं। आदिवासी समुदाय में तो कालिया बाबा की आण चलती है। इनकी सौगन दिलाकर आदिवासियों से सत्य

वचन प्रकटाये जाते हैं। कोई आदिवासी अपने इस देवता की साक्षी लेकर झूठ नहीं बोलेगा।

असीम लोकश्रद्धा के धनी ऋषभदेव अवसर्पिणी युग के प्रथम शासक, प्रथम शिक्षक, प्रथम श्रमण और प्रथम तीर्थंकर थे। असि, मसि और कसि (कृषि) से जुड़ी सर्व कला, संस्कृति, विद्या, व्यापार और आचार-विचार उन्हीं की देन हैं। उन्होंने मनुष्य को धर्म का मर्म, जीवन का मर्म एवं कर्म का मर्म बताया और पुरुषार्थ का पौरूष समझाया। वे मानव सभ्यता और जीवन सरोकारों के सिद्धात्मा थे।

केवल मुनि का यह कथन उल्लेखनीय है- 'उन्होंने भोग प्रधान वातावरण में जीने वाली मानव जाति को पुरुषार्थ एवं कर्मयोग का सन्देश दिया। श्रम और संयम का मार्ग दिखाया। अक्षर बोध दिया। वर्णमाला सिखाकर ज्ञान का द्वार खोला। लेखन, संगीत, नृत्य, कृषि और पाक-विद्या सिखाई। परस्पर प्रेम, सद्भाव, आत्मरक्षा, सुरक्षा संस्था की कला के साथ शस्त्र और युद्धकला का ज्ञान कराया। इसी कारण आज सम्पूर्ण मानव जाति आदीश्वर बाबा के रूप में उनका स्मरण करती है।'

ऋषभदेव ने कहा बहुत कम है, किया बहुत ज्यादा है। सर्व समृद्धि का सुख भोगने वाले ऋषभदेव अचानक अकिंचन बन गये। त्यागी विरागी से वीतरागी बन गये। सबके सनाथ बने भगवान स्वयं के लिए अनाथ बन सर्वतोभावेन आदिनाथ बन गये। किसी को कुछ नहीं कहा।

न धर्म की बात कही, न श्रमण की बात कही। न त्याग की बात कही, न तपस्या की बात कही। बावजूद इसके चार हजार राजन्य पुरुष उनके अनुगामी बन गये। उन्होंने सबकुछ छोड़ दिया और जैसा ऋषभदेव करते रहे, उनके देखादेख वे सब भी करते रहे। भूखे, प्यासे, तड़पते, ठिठुरते, असह्य कष्टों की यातना भोगते रहे। इतने प्रभाव वाला, बिना कुछ उपदेश दिये समृद्ध भोगियों को सर्वरूपेण त्यागी बनाने वाला विश्व इतिहास में कोई और पुरुष नहीं हुआ।

धर्मस्थानकों में तीर्थंकरों की स्तुतियों में महिलाओं के ठाठ का क्या कहना। तीर्थकरों की चौबीसियों और स्तवन गाकर वे फूली नहीं समाती हैं। गर्भवास में तीर्थंकरों की माताओं को आने वाले स्वप्नों के कई गीत लोक की महत्त्वपूर्ण धरोहर बने हुए हैं।

एक सपने का भाव देखिये जब बालजन्म पर कैसा कितना हरख उमड़ छलकता है- 'आंगण ओवरिया चुणावो। नारियलों से नींव भराओ। दाई बुलाओ जो तीर्थंकर को झेले। सोने की छुरी से उसका नारा मोराओ। रूपों की कुंडियों में स्नान कराओ। रानी के आंगन सास बुलाओ जो बालक को पटरी झेले। जोशी बुलाओ जो बालक का नाम निकाले। ढोली बुलाओ जो ढोल बजाये। सेवक बुलाओ जो झालर बजाये। भुआ बुलाओ जो मंगल गाये। कुम्हार बुलाओ जो कलश लाये। सुहागिन से सूरज पुजाओ। हौज खुदाओ। आरती उतरवाओ। झलमा पुजाओ। ढोल्या ढराओ। पगल्या मंडाओ।'

देवपूजा के लिए पूजा का थाल लिये महिलाएं खड़ी हैं। कब दरवाजा खुले। पट खुलें और देवता के दरसण हों-

''सामी कदकी ऊबी रे कदकी खड़ी रे दरवाजे
तोई नी खोल्या द्वार रे
सामी पांव पूजण दोनी मुख देखण दोनी
म्हैं दूरी सूं आयाजी।''

अर्थात्- हे स्वामी! कब से तुम्हारे द्वार खड़ी हैं तो भी दरवाजा नहीं खुला है। स्वामी पांव पूजने दो। मुंह देखने दो। हम बहुत दूर से आई हैं।

ये सपने विवाह पर चाक नूतने के दिन से लेकर विवाह होने तक प्रतिदिन प्रात: गाये जाते हैं। पर्युषण के दिनों में तो मुख्य रूप से इनका गान होता ही है। इनका गाना बैकुण्ठ पाना और नहीं गाना अजगर का अवतार पाना है।

इन्हें गाने वाली को अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति, जोड़ने वाली को झूलता हुआ पुत्ररत्न और रोग-शोक से मुक्ति तथा ज्ञानवरणीय से लेकर अन्तराय तक के आठों कर्मों से छुटकारा हो तो कौन इन्हें गाने-गवाने से चूकेगा!

सपनों से ही जुड़े गीत आदिवासी महिलाओं में भी प्रचलित हैं। इन सपनों में ऋद्धि-समृद्धि नहीं है। सोने-चांदी और रत्नों की माया नहीं है। फलीफूली बाड़ी और खेती है जिस पर उनका पूरा परिवार आश्रित है। यथा-

''सूंती ने सपुन आव्यु म्हारी सैयोर
सपना में रकमनाथ जोया म्हारी सैयोर
रकमनाथ ने पारै तो वाड़ी म्हारी सैयोर।''

एक अन्य गीत में ऋषभदेव को सुमिरते-सुमिरते छोटी बोरवाली बालकी जवान हो गई-

''कूड़ा कनारे केवड़ो केसरियालाल
बोरियं ने परनार बणी है जुनणिमात
नानीक हती सेलड़ी केसरियालाल।''

प्रात: केसरियालाल को याद करने से दिन कमाई वाला निकलता है। गृहस्थी का पेट पलता है। इस दृष्टि से केसरियानाथ का स्मरण रोजी-रोटी देने वाला है। प्रभाती की पंक्ति है-

ऋषि लालचन्द, विनयचन्द, धर्मसिंह की लिखी चौबीसियां तीर्थंकरों की जीवन-लीलाओं की परिचायक हैं। इनमें राम के प्रति तुलसी का जैसा समर्पण भाव- ''राम सौं बड़ो है कौन? मोसौं कौन छोटो? राम सौं खरो है कौन मौसों कौन छोटो?'' देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए -

प्रात: उठ चौबीस जिन्द को सुमिरण कीजै भाव धरी।। टेक।।
(अ) रिषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति सुमति दो कुमति हरी।
पदम सुपास चन्दा प्रभु ध्यावो पुष्पदंत हव्या कर्म अरी।।
तुम सम नहिं कोई तारक दूजो दृढ़ निश्चय मन मांही धरी।
त्रिलोक रिख कहै जिम तिम करीने मुक्तिश्री यो मेहर करी।।
(ब) श्री जिन मुझने पार उतारो प्रभु म्हैं चाकर चरणां रो।। टेक।।
रिषभ अजित संभव अभिनंदन निरंजन निराकारी।
सुमति पदम् सुपारस चन्दा प्रभु मेट्या है विषय विकारी।।
अधम उधारण परम पदारथ अजर अमर अविकारी।
दान शील तप भावना भावो दया धर्म तत्व सारो।
ऋषि लालचंद इण पर विन वे म्हारो करो निस्तारो।।
(स) ऋषभनाथ कू रंग हैं जीत्या जंग जरूर।
भई हार दूरजण तणी काटी फौज करूर।।
काटी फौज करूर आदि अरिहंत देव हैं।
लागत प्रतिफल पांव जगत सहु करत सेव हैं।।
कहै रोड़ कर जोड़ धन है पिता मात कूं।
जीत्या जंग जरूर रंग हैं ऋषीानाथ कूं।।
(द) एक बात तो अजब तुम्हारी हूं जांणू तू धन काला।
तेरा नाम से टूटे बेड़ियां र टूटे लोह का ताला।।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 मार्च 2023

सम्पादकीय

होली की राख, गणगौर की साख

होली के अस्ताचल से गणगौर का सूर्योदय देखने को मिलता है। दोनों का जमीनी रिश्ता है यद्यपि ऐसा लगता नहीं है। दोनों के रूप-रंग, राग-गान जुदा-जुदा हैं। होली के इतिहासजनित मिथक भी लोक में विभिन्न रूपों में प्रचलित हैं। आंचलिक परिवेश हर त्यौहार-उत्सव-संस्कार को बड़े गहन रूप से प्रभावित कर अपनी अच्छाई का वितान देते लगते हैं।

यही कारण है कि एक ही पर्व-त्यौहार-उत्सव के जगह-जगह भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं किन्तु उनकी अन्तर्धारा के उत्स एक ही तरह का वसुधैव कुटुम्बकम का सन्देश लिए रहते हैं।

इसी कारण मानवता के शाश्वत मूल्यों का दरसाव विखण्डित नहीं होता है। समय के बदलाव के साथ उसका ऊपरी आवरण अवश्य परिवर्तित हुआ मिलता है पर भीतरी अन्तरचेतना के सरोकार यूं-के-यूं परत-दर-परत में अनुशासित व्यवस्थित हुए मिलते हैं।

होली जलने के पश्चात जो उसकी जलन-भस्म-राख रह जाती है उसी के पिण्ड बनाकर बालिकाएं सौलह दिन तक उनकी अनुष्ठानमूलक पूजा करती हैं और उसी के फलस्वरूप षोडशी गणगौर बनती है। इसी गणगौर को बालिकाएं अच्छे वर की प्राप्ति के लिए अपनी अन्तस की देवी मानती हैं और बड़ेरी जो विवाहित हैं, वे अपने सुहाग को अखण्ड-अमर बनाये रखने की देवी के रूप में स्तुति-आराधना करती हैं।

इस गणगौर को देवी पार्वती का स्वरूप मान इसके साथ ईसर रूप में शंकर-महादेव को भी साक्षात् कर सजोड़े उनकी सुन्दराकृतियों के साथ कहीं जुलूस रूप में तो कहीं स्थिर बैठकी के रूप में पूजा करती हैं। सुहागिनों का जीवन धन्य सफल तब ही रहता है जब वे पुत्ररत्न को जन्म दें ताकि उनके वंश की वृद्धि हो। मानव की शृंखला अवरूद्ध न हो पाये इसलिए निपूती महिलाएं मनौती स्वरूप इनकी आराधना करती हैं और कहीं-कहीं पुत्ररत्न की प्राप्ति होने पर गणगौर-ईसर के साथ उनके पुत्ररत्न 'भाया' की भी पूजा होती है।

यहां आकर मनुष्य जीवन की सार्थकता प्रतिपादित होती है कि वह स्वयं कुछ नहीं है। वह जो भी कुछ है, उसके ऊपर दृश्य-अदृश्य में किसी-न-किसी देव-देवी-सत्ता की आशीर्वादत्मक छाया है जो उसे खुशहाल जीवन जीने का वरदान दिये कुशल मंगल रखती है।

ऐसे करते मनुष्य अपने जीवन में जितने अभाव, दु:ख, निराशाजनित कष्टों, बीमारियों का सामना करता है, वह हर समय उनसे मुक्ति पाने के लिए विभिन्न देवी-देवताओं की शरण लेता है। इनमें कोई स्वप्न में आकर अपना स्वरूप प्रदर्शित करता है तो कोई स्थायी रूप से अपना आसन स्थिर करने का संकेत देता है। ऐसा करते कुछ देवता समूहवाची बन जाते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि हर मानव का अपना मन-देवता है। हर गांव का, जाति का, समूह का देवता है। कुछ देवता सीमित होकर अपना प्रभाव देते हैं और कुछ का फैलाव बढ़ता राष्ट्रव्यापी और उससे भी परे हुआ मिलता है, ठीक मनुष्य की तरह ही। यह बड़ा दिलचस्प विषय है। इस अवसर पर यदि हम मंथन करें तो अनेक रहस्यों का भी खनन हो सकता है।

भाषा 'स्त्रोतस्विनी नदी'

भाषा 'स्त्रोतस्विनी नदी' की तरह होनी चाहिए। इसके व्यवहार में सांस्कृतिक, भौतिक समृद्धि की व्यापक गुंजाइश भी रहती है। इसे किसी वैधानिक अथवा व्यावहारिक प्रपंच से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए।

भाषाविदों ने किसी-किसी भाषा को 'अमृत- 'कलश' में ठहराये जाने वाला पुण्य प्रसाद मानकर अपनी तरह व्याख्यायित किया है, जो स्वयंसिद्ध नहीं है। भाषा चाहे हिन्दी हो या अन्य, जन-मानस की भाषा होनी चाहिए, जो सरलता से समझी जा सके।

भाषा चाहे हिन्दी हो या अन्य, जन-मानस की भाषा होनी चाहिए, जो सरलता से समझी जा सके। व्याकरण के उपकरणों पर मुहर लगाकर इसे दुरूह अथवा दिग्भ्रष्ट करने की जरूरत नहीं है। भाषा जितनी दुरूह और क्लिष्ट होगी, वह जनसाधारण के बीच से गायब होती जाएगी। भाषा का औचित्य यही है कि उपयुक्त समय और संयोग को ध्यान में रखते हुए इसे अधिक संप्रेषणीय और मधुर बनाया जाये। हिन्दी को अबाध और गतिशील रखने के लिए स्वतन्त्र रूप से व्यवहृत होने की छूट हो तो वह अधिक सरलीकरण और जन साधारण के लिए स्वीकृत भाषा का रूप ग्रहण कर सकती है। हिन्दी में स्त्रीलिंग-पुलिंग की समस्या की वजह से अधिकतर अहिन्दी भाषी लोग नाक-भौंह सिकोड़ते हैं।

व्याकरण के उपकरणों पर मुहर लगाकर इसे दुरूह अथवा दिग्भ्रष्ट करने की जरूरत नहीं है। भाषा जितनी दुरूह और क्लिष्ट होगी, वह जन साधारण के बीच से गायब होती जाएगी। भाषा का औचित्य यही है कि उपयुक्त समय और संयोग को ध्यान में रखते हुए इसे अधिक संप्रेषणीय और मधुर बनाया जाये।

उक्त सन्दर्भ में मुझे एक सम्मेलन में अपने 'स्वागत भाषण' में कहे गये वाक्यांश की याद आ रही है। मंच पर डॉ. नामवरसिंह, बांग्ला की व्याख्याकार श्रीमती महाश्वेता देवी, पण्डित कृष्णबिहारी मिश्र उपस्थित थे। मैंने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा था- 'आलोचना के शिखर पुरुष नामवरसिंह, हजार चौरीसी की मां महाश्वेताजी एवं आंगन की सुधि लेने वाले ललित निबंधकार श्रीकृष्णबिहारीजी तथा दर्शक दीर्घा में बैठे सहभागीगण।' यह सम्मेलन 'हिन्दी के वर्चस्व' को लेकर था। श्रीमती महाश्वेताजी ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि सिद्धेश्वर ने जो बातें कहीं, वह हिन्दी नहीं है। मुझे लगा कि हिन्दी भाषा का जो संस्कार है, उसमें यह अत्योक्ति की तरह है। बहरहाल, मैं कहना चाहता हूँ कि भाषा क्या किसी बंधे-बंधायी लीक पर चलती है? 'प्रवचन की भाषा' से बंधकर कोई भी भाषा बहुत दूर तक अपना वर्चस्व कायम नहीं कर सकती।

आपने शब्दावलियों में का-के-की को संयुक्त रखने या न रखने की ओर संकेत किया है। इसे भी किसी व्यावहारिक चौखटे में नहीं रखा जा सकता। इसी तरह विसर्ग, हलन्त आदि वैयाकरणिक तत्वों से नहीं जोड़ना चाहिए। हिन्दी को अबाध और गतिशील रखने के लिए स्वतन्त्र रूप से व्यवहृत होने की छूट हो तो वह अधिक सरलीकरण और जन साधारण के लिए स्वीकृत भाषा का रूप ग्रहण कर सकती है। हिन्दी में स्त्रीलिंग-पुलिंग की समस्या की वजह से अधिकतर अहिन्दी भाषी लोग नाक-भौंह सिकोड़ते हैं। यह तो अंगरेजी भाषा में भी 'शी' और 'ही' है? यह रहना चाहिए, जो कि बांग्ला भाषा में नहीं है। प्रत्येक भाषा का अपना संस्कार होता है। एकबार शान्ति निकेतन में डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदीजी से हिन्दी में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पूछा था- 'पंडितजी, आप कहां से आया?'- तो क्या हिन्दी अशुद्ध हो गयी?

हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द निरन्तर प्रयोग में आ रहे हैं। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के भी (प्रचलित शब्द) आने लगे हैं। आंचलिक भाषाओं के शब्द, वाक्य कथोपकथन में शामिल हैं। भोजपुरी, मैथिली, ओड़िया, छत्तीसगढ़ी, बिहारीपन की गन्ध और मधुरता भी मिलने लगे हैं। इससे क्या संस्कृतिनिष्ठ भाषा हिन्दी को कोई खतरा है? नहीं, इससे भाषा का विस्तार और उसकी गहराई का पता चलता है। इससे भाषा समृद्ध होती है।

- सिद्धेश

'वैदहि ओखद जाणे : मीरां और पश्चिमी ज्ञान मीमांसा' लोकार्पित

नई दिल्ली (ह. सं)। सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो. माधव हाड़ा की नयी पुस्तक 'वैदहि ओखद जाणे : मीरां और पश्चिमी ज्ञान मीमांसा' का लोकार्पण दिल्ली में चल रहे विश्व पुस्तक मेले में हुआ। लोकार्पण सत्र में बनास जन के संपादक पल्लव ने लेखक हाड़ा से पुस्तक पर संवाद किया।

प्रो. हाड़ा ने कहा कि यूरोपियन शोध में अभी तक मीरां के जीवन और कवि कर्म के बारे सम्यक विवेचन का अभाव है जिसका कारण मीरां की अपनी सांस्कृतिक पारिस्थिकी से अलग पश्चिम के मानदंडों पर मूल्यांकन करना है। इस पुस्तक में पश्चिमी विद्वता के सांस्कृतिक मानकों पर मीरां के मूल्यांकन को समझने-परखने के प्रयासों की पड़ताल की गई है। प्रो हाड़ा ने यहां जेम्स टॉड, हरमन गोएट्ज, विनांद कैलवर्त और स्ट्रेटन हौली जैसे पश्चिमी विद्वानों के मीरां पर किए गए अध्ययन का विश्लेषण किया गया है।

लोकार्पण में प्रो. कृष्णमोहन श्रीमाली, प्रो. शम्भू गुप्त, वीरेंद्र यादव, डॉ. कनक जैन, डॉ. रेनु त्रिपाठी उपस्थित थे। संयोजन मनोजकुमार पांडेय ने किया। आभार राजकमल प्रकाशन के आमोद माहेश्वरी ने ज्ञापित किया।

-अनुपम त्रिपाठी

'आधी आबादी के किस्से' लोकार्पित

जयपुर (ह. सं)। हिंदी में सभी गद्य विधाओं में निबंध सबसे पुरानी और लोकप्रिय विधा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र से हमारे समय तक निबंध लिखने और पढ़ने का उत्साह बना हुआ है। ये विचार संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा के कुलपति और हिंदी आचार्य प्रो. अशोक सिंह ने डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल के निबंध संग्रह 'आधी आबादी के किस्से' के लोकार्पण पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि नियमित निबंध लिखने का कौशल कम गद्य लेखकों में होता है और दुर्गाप्रसादजी

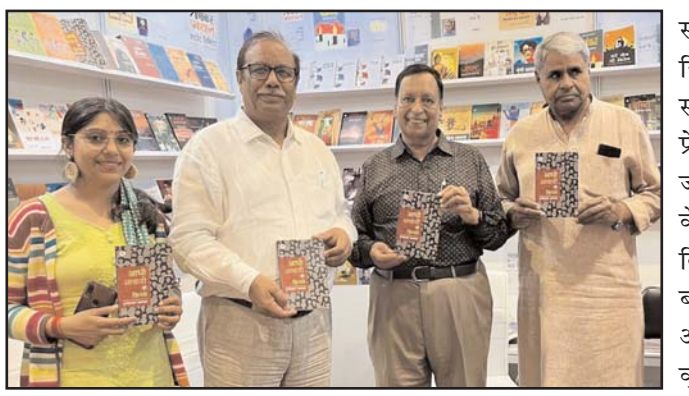

ने जिस प्रतिबद्धता से निबंध लिखे हैं वह अभिनन्दनीय है।

सूरज प्रकाश ने कहा कि जिस सरल सहज भाषा में अग्रवाल लिखते हैं वह किसी भी गद्य लेखक के लिए स्पृहणीय है। हरिराम मीणा ने कहा कि वे अग्रवाल की गद्य लेखन के प्रारंभिक पाठकों में से हैं। अग्रवाल जैसे लेखक अपने निबंधों में सामाजिक विषयों को जिस व्यापकता के साथ सम्बोधित करते हैं वह भी प्रेरणास्पद है। रामशरण जोशी ने कहा कि रोजमर्रा के विषयों पर लिखना किसी भी लेखक के लिए बड़ी चुनौती है और डॉ अग्रवाल ने इस चुनौती को कुशलता से निभाया है। समारोह में राजीव सिंह, राघवेन्द्र रावत, ज्ञानचंद बागड़ी, ए. एल. दमामी, नवीन चौधरी, मिहिर पंड्या, डॉ. उषा गोयल, रश्मि भटनागर ने भागीदारी की। संयोजन पल्लव ने किया। अंत में प्रभाकर प्रकाशन के सम्पादकीय प्रभारी अंशु चौधरी ने आभार प्रदर्शित किया।

- फारुक अफरीदी

'युवा कहानी में स्त्री स्वर' पर संगोष्ठी आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी एवं शहीद सी. एस. राठौड़ फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में 'युवा कहानी में स्त्री स्वर' विषयक संगोष्ठी विज्ञान समिति में आयोजित हुई। फाउंडेशन की संस्थापक- निदेशक डॉ. अनुश्री राठौड़ ने बताया कि स्त्री एक ऐसा चरित्र है जो हमेशा ही साहित्य में विमर्श का विषय रहा है। चाहे कवि हो, कहानीकार हो या विचारक उसकी रचनात्मकता में कहीं न कहीं स्त्री जरूर होती है लेकिन एक स्त्री स्वयं क्या सोचती है अपने बारे में, वह अपने को समाज में कहां खड़ा देखती है? खासकर स्त्रियों की आज की युवा पीढ़ी! यह भी विचार-विमर्श का विषय है और इसी प्राकल्पना पर केंद्रित है 'युवा कहानी में स्त्री स्वर' संगोष्ठी।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. विद्या पालीवाल ने की। मुख्य अतिथि डॉ. निर्मल गर्ग एवं विशिष्ट अतिथि डॉ.तराना परवीन थीं। डॉ. विमला भंडारी ने कहा कि आज ऐसी कहानियां होनी चाहिए जो अपने समय के सच को रेखांकित करे। तराना परवीन ने कहा कि कहानी सदैव युवा होती है। निर्मल गर्ग ने बताया कि नारी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती रहनी चाहिए। डॉ.विद्या पालीवाल ने कहा कि जो नारी मन में खटकता है उसे उभारने की आवश्यकता है। इस अवसर पर चंद्रप्रकाश चित्तौड़ा की लघु पुस्तिका का विमोचन किया गया। संचालन निर्मला शर्मा ने किया।

अपना देश अपनी संस्कृति

आढ़तिया कवि थावरचन्द

थावरचन्द बापना उदयपुर के प्रसिद्ध आढ़तिया व्यापारी तो थे ही मगर अच्छे काव्य-रसिक और कवि-मन भी थे। उनके पिता भीमराज बड़े सन्तोषी व सात्विक व्यपारी थे। वे सावन भादो में कोई व्यापार नहीं करते।

वर्ष में 500 रूपये से अधिक नहीं कमाते। चार सौ से अधिक खर्च नहीं करते। सौ रूपये बचते सो मुसीबत के समय काम में लेते या फिर कोई विशिष्ट मौका आ पड़ता तो उसमें खर्च कर देते।

इन दोनों बाप-बेटे के नाम की मण्डी में आज भी प्रसिद्ध फर्म 'भीमराज थावरचन्द बापना' के नाम से चल रही है जिसकी बड़ी अच्छी पैठ है। दयालु और धर्मात्मा थावरचनद ने कबूतरों को प्रतिदिन दाना चुगाने के लिए कबूतर पेटी प्रारम्भ की जो भी यथावत चल रही है। उन्होंने अपनी पत्नी के साथ तीन-तीन, चार-चार बार लम्बी धर्म यात्राएं कीं और लौटने पर स्वामी वत्सल में आमरस के लड्डू बनवाकर बड़े ठाठ से चक भोजन कराया गया।

संवत् 1972 में जब कैदशाली हो गई तब थावरचन्द के पास दस हजार मन अनाज था। चाहते तो मालोमाल हो सकते थे पर उसे भाव कायम कराकर बेचा जिससे दरबार फतेहसिंहजी पर अच्छा असर पड़ा।

एक और बड़ा काम उन्होंने व्यापारी वर्ग में प्रचलित सैकड़ों बरस की लागत को बन्द करवाने का किया। इस लागत से व्यापारी वर्ग को बड़ी परेशानी थी। इसके लिए थावरचन्दजी को कई हाकिमों को समझाना पड़ा और काफी समय भी लगा। मण्डी व्यापारियों की समस्या सुलझाने के लिए एक कमेटी भी इनकी प्रेरणा से बनी जिसके ये अध्यक्ष बनाये गये।

25 फरवरी 1981 को एक लारी वाले के कबाड़े में ओंकारश्री को एक फटी चिथड़ी पोथी हाथ लगी जिसका नाम 'मनोरंजन कविता' था। इसके लेखक संग्राहक थावरचन्द बापना थे। इस कवि की टोह में जब हम धानमण्डी में उनकी फर्म पर पहुंचे तो उनके पोते बसन्तीलाल ने थावरचन्दजी से सम्बन्धित बहुत सारी बातें बताई।

रतनलालजी मेहता उनके बहुत अच्छे साथी थे जो साहित्यानुरागी थे। उन्हीं की प्रेरणा और प्रयास से थावरचन्दजी ने यह किताब छपवाई। वि. सं. 2015 में यह किताब छपी जिसका मूल्य ही ज्ञान, बुद्धि और नित्य पठन रखा गया। इससे थावरचन्दजी की मूल वृत्ति और प्रवृत्ति का पता लगाया जा सकता है। यह किताब कोई दो सौ पृष्ठों की है।

इसमें शिक्षोपयोगी एवं धार्मिक, नैतिक भावना से भरपूर कवित्त, दोहे, सवैये तथा छन्द हैं। इनमें कुछ का संकलन किया गया और शेष थावरचन्दजी रचित हैं। कइयों में तो 'थावर' नाम की छाप भी है।

इसमें कई अनोखी बातें सूत्र रूप में हैं जैसे तारा टूटने के तीन कारण हैं- देवता या तो वेक्रिय रूप करे या मैथून करे या स्थान बदले तो तारा टूटे। जीव निकलते ही जिसका पांव गरम हो तो समझो नरक में गया। जांघ गरम हो तो तिर्यंच में, पेट-छाती गरम हो तो मनुष्य गति में और गर्दन-सिर गरम हो तो देवगति में गया। इसी प्रकार भोगों में लिप्त रहने वाला मनुष्य गति से जन्मा, लोभी देवगति से, डरपोक नरकगति से और अधिक खाऊ तिर्यंच गति से जन्मा है।

इसी प्रकार तीर्थ की नामावली में माता-पिता, बड़ा भाई, सास, ससुरा, साला, साली, साणू का नाम गिनाया मगर सबसे बड़ा तीर्थ घरवाली को माना गया है।

माण्डल का नाहर नृत्य

राजस्थान का प्रसिद्ध नाहर नृत्य केवल राम और राज के सामने ही प्रस्तुत किया जाता है। भीलवाड़ा जिले के माण्डल कस्बे में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को यह नृत्य बड़े मन्दिर के चौक में ठाकुरजी के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

कहते हैं कि 1674 ईस्वी में दक्षिण भारत से लौटते समय बादशाह शाहजहां के माण्डल पड़ाव पर भी नाहर नृत्य किया गया था। चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को माण्डल में पूरे दिन त्यौहार का माहौल हता है। सुबह से ही लोग रंग खेलने निकलते हैं जो दोपहर को बड़े तालाब पर इकट्ठे होते हैं।

बाद में चमारों से मांग कर लाई गई खाट पर दल के मुखिया को बैठाया जाता है। फिर उसे पत्तियों, जूतों की माला आदि से स्वांग रच कर जुलूस के रूप में बड़े मंदिर ले जाया जाता है। यहां दूसरी ओर से आने वाले जुलूस की प्रतीक्षा की जाती है। दूसरे जुलूस का मुखिया धोती, कुर्ता और पगड़ी बान्धकर खाट पर बैठे

हुए आता है। यहां से दोनों मुखियाओं की प्रतिस्पर्धा शुरू होती है। तहसील तक यह दौड़ होती है जहां पहले पहुंचने वाले मुखिया को बादशाह तथा बाद में पहुंचने वाले को बेगम का खिताब दिया जाता है।

तहसील से सभी गैरिये अपने-अपने घरों को लौट आते हैं और शाम को बड़े मन्दिर के चौक में नाहर नृत्य देखने इकट्ठे होते हैं। ढोल और बांकिये की लय और ताल पर नाहर का स्वांग बने चार व्यक्ति एक-डेढ़ घण्टे तक नृत्य करते हैं। बाद में आधा घण्टा पुरानी कचहरी में नृत्य होता है।

नाहर बनने वाले व्यक्ति के सारे शरीर पर सुतली से रूई बांधी जाती है। सिर पर लकड़ी के दो सींग लगाकर उन्हें भी रूई से ढक दिया जाता है। नाहरों का स्वांग करने वाले माण्डल में आठ माली परिवार हैं। नाहरों के साथ उन्हें नचाने वाला भील जाति का एक भोपाजी होता है जो लाल रंग की चड्डी और लाल टोपी पहने होता है। उसके हाथ में मोरपंखी होती है।

नाहरों को चिड़ाकर उनसे तरह-तरह की भंगिमाएं करवाने वाला लखारा जाति का एक व्यक्ति भी होता है जिसके हाथ में लकड़ी का एक दस्ता होता है। उससे वह नाहरों को दिखा-दिखा कर चिड़ाने का अभिनय करता है।

- म. भा.

काक विद्या के महारथी थे मोड़ाबा

मेणार के रहने वाले मेनारिया मोड़जी कानावत कई विद्याओं के जानकार थे। समाज में भी उनकी मोतबीरी भूमिका के चर्चे सौ वर्ष गुजरने पर भी बड़े जीवन्त रूप में सुनने को मिलते हैं। यह बात गमलों में गुल खिलाते पौधों की देखभाल करते बागवान मांगीलालजी मेघवाल (60) ने बताई।

उन्होंने बताया कि मोड़ाबा को सभी लोग बड़ी इज्जत देते कारण कि वे अपने समय में पूरे गांव के हमदर्दी थे। सभी तरह की मांदगी का इलाज वे जड़ीबूंटियों तथा वनस्पतियों से करने के उस्ताद थे। अपने इस अड़क इलाज के कारण वे पूरे चोखले में लोकप्रियता लिए थे और गम्भीर बीमारी में नि:शुल्क इलाज बीमार के पास पहुंच कर करते थे।

मांगीलालजी के पिता चुन्नीलालजी ने समय-समय पर मोड़जी की सेवा-भावना का जिक्र करते और भी अनेक बातें बताईं। यह भी कहा कि वे शकुन विद्या के भी उस्ताद थे।

कौआ, बिल्ली, सांप, छछून्दर, चीड़ा, चींटी, छिपकली, उदई, भमरा, टांटिया, चूहा, मधुमक्खी, तोता, कबूतर, मैना, कोयल, मोर आदि की बोली तथा जीवनधर्मिता से जुड़े सरोकारों का अध्ययन तथा विश्लेषण कर जो देखी भोगी बातें कहते, उन्हें बड़े रसिक मन से सुनाते और चलते-चलते कई तरह की ऐसी जानकारी देते जो अचरज में डाल देती।

मांगीलालजी ने सुनाया कि मेणार की गैर बहुत प्रसिद्ध है तो मैंने कहा कि सबसे पहले पापा डॉ. महेन्द्रजी ने ही मेणार में जमराबीज को होने वाली तलवारों की गैर देख धर्मयुग में लिखा जिसका बड़ा तहलका मचा। वैसी गैर कहीं प्रचलन में नहीं है। इसके साथ वह इतिहास भी छिपा है जिसमें मेणार के मेनारिया समाज के बीर बहादुरों ने मुगलों से लोहा लेकर बड़ी तरकीब से अपना शूरत्व जगाया और मात दी।

मांगीलालजी के अनुसार इसी गैर के आयोजन के सिलसिले में ऊंकारेश्वर चौरे पर तब गांव के सब समाजजन सलाह-मशविरा करने एकत्र हुए।

कुछ समय बाद अचानक मोड़ाबा को एक कौए की बोली सुनाई दी। मोड़ाबा समझ गये कि शीघ्र ही कोई अनिष्टकारी घटना घटने वाली है।

यह सोच उन्होंने वहां उपस्थित समाजजनों को सावधान करते कहा कि अब यहां से निकल चलो। किसी दुखद घटना से पाला पड़ सकता है। यह सुन सभी लोग वहां से जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि सामने से एक अर्थी आती मिली। पता चला कि गांव का ही एक व्यक्ति बैल के सींगड़ा मारने से बुरी तरह आहत हो मृत्यु को प्राप्त हो गया।

- डॉ. तुक्तक भानावत

उबला हुआ स्वादिष्ट इक्षुरस : काकब

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

हम भारत वाले कितनी सदियों से अन्न का आहार इक्षुरस के विविध रूपों के साथ कर रहे हैं? यह कहना कठिन है लेकिन यह बताना भी सरल नहीं है कि ईख से गुड़ के अलावा और कितनी चीजें बनती रही हैं! इक्ष्वाकु कुल वाले देश की ख्याति कहां-कहां तक नहीं हुई? यूनान वाले भी इसके स्वाद के लोभ से नहीं बचे तो खुद खेती करने लगे और इस उपज से वस्तु बनाने में दक्ष लोगों को अपने यहां ले गए। याद होगा कि पहली बार गन्ना सिकंदर की सेना के साथ यूनान पहुंचा था। सुगरकेन नाम तभी से चला।

शकर के स्वाद की अभ्यस्त नई पीढ़ी को 'काकब' की जानकारी भी नहीं होगी। अच्छे, निगोठ और निरोग ईख के रस को कड़ाह में खूब उबाला जाता है लेकिन गुड़ नहीं बनने दिया जाता। चाशनीदार होते ही उतार लिया जाता है और फिर कलशों-कलशियों में भर दिया जाता है। यह काकब या काबक है। संस्कृत में फाणित नाम मिलता है लेकिन वह राब का ही रूप है। कहीं-कहीं इसको राब के नाम से भी जाना जाता है। उतरती सर्दी में यह खाया जाता है।

बुजुर्ग बताते हैं कि जब भी चपाती खाएं, उस पर एक दो चम्मच लेलें और थोड़ा घी का टपका भी मिला दें। भुंगल बनाकर या कौर लगा-लगा कर खाएं। भुलाए नहीं भूलने वाला स्वाद। डकार लेना ही भूल जाए। चपाती चढ़ा काकब और घी अनूठी तृप्ति देते हैं। कैसे बताएं? ऐसा स्वाद मुंह से तो कहा ही न जाएगा! बताना हो तो काकब खिलाकर ही बताया जाएगा। मेवाड़ के गिरवा क्षेत्र में माघ और फागुन में जहां कहीं चरखी चलती है, वहां स्वाद का रस यह सब करवा देता है।

रोचक बात है कि चरखी में 24 घंटे में चार नांद के बराबर ही रस निकाल पाते हैं। हर बार नांद भरने के बाद कड़ाह में लगभग 3-4 घंटे छूल (बड़ा चूल्हे) में उबाला जाता है जिससे उबलते उबलते तीन तार आने पर उतार लिया जाता है और ठंडा होने के लिए बड़े बरतन में डाल देते हैं और ठंडा होने पर भांडे में भर लेते है।

इस प्रकार से तैयार गुड़ तीन तरह का होता है। काकब सबसे पतला होता है। काकब के लिये डेढ़ तार चाशनी आने पर उतार लिया जाता है। करीब दस बारह बाल्टी प्रमाण वाले पुराने चड़स से लगभग डेढ़ गुना बड़ी होती है नांद।

यह भी कहा गया है कि काकब को राब के नाम से जाना गया है। मिट्टी की मटकी में रखे हुए रस में गर्मी में मिश्री का ढेला बनता वही काकब होता। काकब का रवा खाने में आनंद आ जाता था, अब तो गन्ना ही कम हो गया। अगर अंग्रेज़ बनाते तो आकर्षक बोतलों में अनेकों स्वाद (फ्लेवर इलायची, लौंग, अदरक..) में आ जाते, मार्केटिंग भी हो जाती, किन्तु काकब है जो जैसा था, वैसा ही चल रहा है सदियों से!

बाजार / समाचार

आर्ची आर्केड में होली मिलन समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। होली हेलमेल का, भाईचारे का, प्रेमभाव का त्यौहार है। आपसी द्वेष, ईर्ष्या तथा कलुष मेटकर रंग बांटकर खुशियां मनाने का त्यौहार है। इस दिन कितने ही रंग बरसते हैं, राग-रागिनियां गाई जाती हैं। इसी के तहत आर्ची आर्केड रेजिडेंशियल वैलफेयर सोसायटी, वृंद्धावन धाम गली नं. 3, आर्बिट-1 तथा ड्रीम डिजाइनर के संयुक्त तत्वावधान में होली मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। इसमें 250 से अधिक लोगों ने शिरकत की।

पं. नारायण पानेरी के सान्निध्य में डॉ. तुक्तक-रंजना भानावत एवं अनिल-सुषमा कटारिया ने सजोड़े पूजन कर होलिका दहन किया। इस अवसर पर मुकेश कलाल, पीयूष पारिक, आलोक लसोड़, अनिल शर्मा, ए. के. जैन, डॉ. धवल शर्मा, चेतन जैन, आनंद मेहता, गोपाल पोरवाल, शत्रुघ्न सेठी, अशेश्वर साहनी, डॉ. जयेश द्विवेदी, प्रवीण जैन, विजयसिंह पंवार, सुभाष मेहता, के. बी. गुप्ता आदि उपस्थित थे।

वाद्य यंत्रों और सुरों की जुगलबंदी से श्रोता हुए रस विभोर

उदयपुर (ह. सं.)। पं. चतुरलाल मेमोरियल सोसाइटी और हिन्दुस्तान जिंक लि. के संयुक्त तत्वावधान में 'स्मृतियां' का 22वां संस्करण शिल्पग्राम के मुक्ताकाशी रंगमंच पर 04 मार्च को आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में युवा तबलावादक प्रांशु चतुरलाल, फनकार क्लेरेनेट पर मिठ्ठालाल, रावणहत्था पर हरफूलराम नायक, सारंगी पर आमीर खां एकसाथ मंच पर क्या बैठे, शिव ख्याद से सुरों का सारा संसार कुछ देर के लिए मानो वहीं रच-बस गया। इन वादकों की जुगलबंदी की शुरुआत म्हारा बाईसा राज धुन से हुई। कलाकारों ने केसरिया बालम तथा बालम जी म्हारा की प्रस्तुति देकर खूब वाहवाही लूटी।

इसके बाद दीपक महाराज ने कत्थक की प्रस्तुती दी। भजन सम्राट अनूप जलोटा ने ऐसी लागी लगन,

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया, जग में सुंदर है दो नाम भजनों के साथ लज्जे गम बढ़ा दीजिये और तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो गजल की प्रस्तुति दी। इसके पश्चात दीपक महाराज तथा अनूप जलोटा ने रंग दे चुनरिया पर भव्य जुगलबंदी की जिससे श्रोता रसविभोर हो गए।

कार्यक्रम में जिंक प्रतिभा टैलेंट हंट के विजेता जयपुर के एश्वर्य आर्य ने पखावज पर उस्ताद अमुरूद्दीन के साथ सारंगी पर संगत कर श्रोताओं को अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। कार्यक्रम में निवृति कुमारी, हिन्दुस्तान जिंक के सीएफओ संदीप मोदी, सीएसआर हेड अनुपम निधि, अखिलेश जोशी, प्रवीण शर्मा, पं. चरणजीत, श्रीमती मीतालाल, सहित प्रमुख गणमान्य एवं श्रोता उपस्थित थे। संचालन श्रुति चतुरलाल ने किया।

आयोजन में राजस्थान पर्यटन, सह-प्रायोजक राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लि., भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन, मिराज ग्रुप, यूफोनिक योगा, वेन्यू पार्टनर वेस्ट जोन कल्चरल सेंटर, उदयपुर और हॉस्पिटैलिटी पार्टनर प्राइड होटल ने सहयोग दिया।

महावीर युवा मंच का होली मिलन समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। महावीर युवा मंच द्वारा ऐश्वर्या रिसोर्ट में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इसमें मंच के सदस्य परिवारों ने भाग लिया। अध्यक्षता संरक्षक प्रमोद सामर ने की।

अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि समारोह में होली बेंगन, बॉल गेम एवं डांस प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। होली बेंगन और बॉल गेम में प्रेरणा-नरेन्द्र जैन प्रथम, प्रमिला-अजय पोरवाल द्वितीय तथा मंजुला-रमेश सिंघवी तृतीय रहे जबकि डांस में सपना-राजेश चित्तौड़ा प्रथम रहे।

प्रमोद सामर ने सुझाव दिया कि आजकल परिवार का आशय केवल पति-पत्नी तक सीमित हो गया है। ऐसी स्थिति में प्रमुख इकाई के रूप में बच्चे विमुख हो गये हैं। हमें उनके लिए ऐसे आयोजन करने चाहिये जिससे उनका समुचित विकास हो सके। विभिन्न गतिविधियों द्वारा उनके शारीरिक एवं मानसिक पक्ष को जैनत्व के संस्कारों से सुगम बनाया जा सकता है। आगे आने वाली महावीर जयंती पर भी मंच द्वारा उपयोगी आयोजन हो इसके लिए गम्भीरतापूर्वक विचारणा करें। संचालन महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया ने किया। इस अवसर पर मनोज मुनोत, नीरज सिंघवी, अर्जुन खोखावत, दिलीप मोगरा, रमेश सिंघवी, नरेन्द्र जैन, ओम पोरवाल, संजय नागोरी, सतीश पोरवाल, कमल कावड़िया, निर्मल पोखरना, बसंत खिमावत, अशोक लोढ़ा, विक्रम भण्डारी, डॉ. स्नेहदीप भाणावत, महेश कोठारी ने अपने विचार साझा किये। संयोजन अनिता-संजय नागोरी एवं मधु-भगवती सुराणा द्वारा किया गया।

मुग्दल को वेदव्यास, सहगल को वागीश्वरी और आफरीदी को साहित्य विभूषण सम्मान

जयपुर (ह. सं.)। इंडिया नेट बुक्स, बीपीए फाउंडेशन और अनुस्वार पत्रिका द्वारा दिल्ली के मयूर विहार क्राउन प्लाजा होटल में अपने वार्षिक साहित्यकार सम्मान उत्सव का आयोजन किया गया। इसमें उपन्यासकार चित्रा मुग्दल को वेद व्यास, नाटककार-लेखक प्रताप सहगल को वागीश्वरी और व्यंग्यकार फारूक आफरीदी को साहित्य विभूषण सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर देश-विदेश के कुल 52 वरिष्ठ, युवा और बाल साहित्यकारों सहित जाने-माने पत्रकारों को भी सम्मानित किया गया। डॉ. संजीवकुमार, डॉ. मनोरमा कुमार और कामिनी मिश्रा द्वारा ये पुरस्कार प्रदान किए गए। आयोजक डॉ. संजीवकुमार ने संक्षेप में इंडिया नेटबुक्स, बीपीए फाउंडेशन और अनुस्वार पत्रिका के कार्यकलापों एवं भावी योजनाओं की जानकारी दी।

को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक और फ्लिपकार्ट समूह ने उद्योग का प्रथम को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया है। यह क्रेडिट कार्ड केवल फ्लिपकार्ट होलसेल सदस्यों के लिए है। यह क्रेडिट कार्ड डाईनर्स क्लब इंटरनेशनल नेटवर्क पर चलेगा, जो डिस्कवर ग्लोबल नेटवर्क का हिस्सा है। इसका उपयोग विश्व में 200 से ज्यादा देशों में किया जा सकता है, जहाँ डाईनर्स क्लब कार्ड स्वीकार किए जाते हैं। इस गठबंधन के अंतर्गत फ्लिपकार्ट होलसेल के रजिस्टर्ड सदस्यों को फ्लिपकार्ट होलसेल ऑनलाईन खर्चों पर उद्योग का प्रथम ऑफर, यानि 5 प्रतिशत का कैशबैक मिलेगा। दूसरे फायदों में 1,500 रूपये मूल्य का एक्टिवेशन कैशबैक, जीरो ज्वाईनिंग शुल्क, तथा यूटिलिटी बिल्स एवं अन्य खर्चों पर अतिरिक्त कैशबैक शामिल है। को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड के लॉन्च से भारत में छोटे व्यापारियों को क्रेडिट की उपलब्धता बढ़ेगी और डिजिटल भुगतान को स्वीकार करने में तेजी आएगी तथा उन्हें कई अन्य फायदे भी मिलेंगे।

नेक्सॉन ईवी ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपनी जगह बनाई

उदयपुर (ह. सं.)। टाटा मोटर्स ने घोषणा की कि नेक्सॉन ईवी ने एक इलेक्ट्रिक वाहन द्वारा कश्मीर से कन्याकुमारी तक की 'सबसे तेज' ड्राइव करके इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपनी जगह बनाई है। नेक्सॉन ईवी ने सिर्फ 95 घंटे और 46 मिनट (4 दिन) में 4003 किलोमीटर की ड्राइव पूरी की है और मल्टी-सिटी ट्रिप्स के लिये अपनी क्षमता को सफलतापूर्वक साबित किया है। इसके अलावा, यह नॉन-स्टॉप ड्राइव भारत के राजमार्गों पर मौजूद पब्लिक चार्जिंग के विस्तृत और बेहतरीन नेटवर्क के कारण भी संभव हो सकी।

क्लियरट्रिप द्वारा 90+ शहरों में बस सेवाएं लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। फ्लिपकार्ट की कंपनी क्लियरट्रिप ने गर्मी की छुट्टियों से पहले अपने ऐप पर बस सेवाओं के लॉन्च की घोषणा की है, जिससे कि यात्रा में ज्यादा कनेक्टिविटी मिलेगी। कंपनी के पास अभी 10 लाख बस कनेक्शंस की इनवेंटरी है और इसकी योजना भारत में सबसे बड़ा बस नेटवर्क तैयार करने की है। कंपनी ने उदयपुर में 200+ बस ऑपरेटरों को जोड़ा है।

बस बुकिंग का नया बिजनेस बेमिसाल फ्ले क्सिबिलिटी और पारदर्शिता के साथ यूजर की महत्वनपूर्ण आवश्यककताओं को पूरा करेगा। इसकी कुछ खास खूबियों में 24 घंटे 7 दिन वॉइस हेल्पकलाइन, कोई गुप्त शुल्क नहीं, तेजी से रिफंड और आसान कैंसीलेशन की सुविधा शामिल हैं। लॉन्च ऑफर के तहत यूजर्स 31 मार्च तक सारी बस बुकिंग्स पर 'शून्य सुविधा शुल्क' और 10 प्रतिशत की सीधी छूट ले सकते हैं। बोनस के रूप में कंपनी ने भारत की सबसे बड़ी समर ट्रैवेल सेल नेशनऑनवेकेशन को भी शुरू किया है, जिसमें होटलों, उड़ानों और बसों पर उद्योग में पहली बार की पेशकशें हैं। यह क्लियरट्रिप की प्रमुख आईपी का पहला संस्करण है, जो हर साल चलेगा और यात्रा को पहले से ज्यादा किफायती बनाएगा।

मोबिल 1 ट्रिपल एक्शन पावर प्लस का लोकार्पण

उदयपुर (ह. सं.)। एक्सॉनमोबिल ने अपने श्रेष्ठतम पूर्ण रूप सेसिंथेटिक इंजन ऑयल, मोबिल 1 ट्रिपल एक्शन पावर प्लस का लोकार्पण किया, जो विशेष रूप से ईंधन की न्यूनतम खपत और अतिरिक्त लाभ के साथ इंजन के उत्कृष्ट प्रदर्शन, सुरक्षा और स्वच्छता प्रदान करके कार मालिकों को अपने वाहनों की शक्ति का बेहतरीन कार्य प्रदर्शन करने में मदद करने हेतु तैयार किया गया है। विपिन राणा, सीईओ, एक्सॉनमोबिल ल्यूब्रीकेंट्स प्रा. लि. ने कहा कि हमने अपने मोबिल 1 इंजन ऑयल का परीक्षण प्रयोगशाला में, सडक़ पर, और और विश्व के कुछ सबसे कठिन मार्गों पर, अधिकतम ऊँचाई वाले, और वास्तविक जीवन परिस्थितियों की प्रतिकृति करते हुए करते हैं। फॉर्मूला वन मोबिल 1 इंजन ऑयल के लिए अंतिम परीक्षण आधार है, जो रेस कारों के सभी चलने वाले हिस्सों में घर्षण और घिसने को कम करने में मदद करता है।

पत्रों के आलोक में (6) : डॉ. महेन्द्र भानावत

डॉ. शिवानन्द नौटियाल, लखनऊ के पत्र

लखनऊ के डॉ. शिवानन्द नौटियाल साहित्य और राजनीति; दोनों घोड़ों पर बराबरी की सवारी लिये थे। वे गढ़वाली लोकसाहित्य के मर्मज्ञ तथा गम्भीर लेखक थे। इस सम्बन्धी एक बड़ी पुस्तक उन्होंने मुझे भी भेजी थी।

मेरे पास उनके लिखे पांच पत्र हैं। पांचों ही महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें उन्होंने मुझसे भेंट करने तथा मेरे द्वारा लिखित साहित्य पढ़ने की इच्छा के साथ-साथ प्रत्येक पुस्तक वी. पी. से भेजने का अनुरोध किया है। वे उत्तरप्रदेश के उच्चशिक्षा एवं पर्वतीय विकास मंत्री रहे। मैंने उनके प्रत्येक पत्र का उत्तर देते उनके द्वारा चाही गई जानकारी से उन्हें अवगत किया।

यहां उनके पत्रों के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश प्रस्तुत हैं-

पहला पत्र

आदरणीय डॉ. भानावतजी

सादर नमस्कार

आपको मेरा पत्र पाकर आश्चर्य होगा। मैं आपको, आपके विशेष साहित्य के कारण वर्षों से जानता हूं और आपकी प्रतिभा का कायल हूं, आपका प्रशंसक हूं।

गत वर्ष इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी शिमला की ओर से एक निमंत्रण मिला था। शिमला पहुंचने पर मुझे ज्ञात हुआ कि आपको और मुझे एक ही कमरे में रहना है। बड़ी खुशी हुई थी कि आपके साथ रहकर बहुत ही विशिष्ट बातों की जानकारी होगी परन्तु आपके दर्शन वहां नहीं हो पाये। इसका भी मन में काफी कष्ट रहा। आशा है, कभी आपके दर्शन अवश्य होंगे और मेरी दर्शन करने की इच्छा अवश्य पूरी होगी।

ट्रेडिशनल पर्फोमिंग आर्ट्स के ऊपर उदयपुर के केन्द्र पर पर्याप्त काम हुआ है। यदि आप कृपा करके मुझे राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों की पारम्परिक प्रदर्शनकारी कलाओं के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करा सकें तो मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। उदयपुर के लोकसंस्थान (भारतीय लोककला मण्डल) में आपने काफी काम किया है। यदि आप अपने बहुमूल्य समय में से कुछ समय निकाल कर मुझे आवश्यक निर्देश दे सकें तो आभार मानूंगा। कृपया मार्गदर्शन कर अनुगृहीत करें।

आपका

डॉ. शिवानन्द नौटियाल

दूसरा पत्र

आपका पत्र तथा पुस्तकें यथा समय प्राप्त हो गईं थीं। डॉ. साहब मैं आपका पहले से ही भक्त था अब पुजारी भी हो गया हूं। पुस्तकों को पढ़कर आपके स्तुत्य कार्य को देख और समझकर दंग रह गया। राजस्थान आप जैसे यशस्वी पुत्र को जन्म देकर धन्य हो गया है। आपकी रचनाओं को पढ़कर राजस्थान के विषय में विस्तृत जानकारी हो जाती है। इन सभी पुस्तकों से मेरा ज्ञानवर्धन हो रहा है। आपके ऐसे कार्य को देखकर आश्चर्य होता है कि आपने इतना समय कब निकाला होगा? मेरी श्रद्धा आपके प्रति द्विगुणित हो गई है। कभी समय मिला तो आपके पास आकर अपनी वर्षों की इच्छा पूर्णकर ज्ञान अर्जित करूंगा।

- 23-03-1993

तीसरा पत्र

आपने मेरे कालिदास सम्बन्धी लेख की प्रशंसा की। यह आपकी उदारता का ही मुख्य कारण है कि आप सदैव मुझे प्रोत्साहन देते रहते हैं। मैं आपके महत्त्वपूर्ण कार्यों से सदैव प्रेरणा लेता रहा हूं। आज भी आपके महत्त्वपूर्ण लेखों और पुस्तकों से पर्याप्त मार्गदर्शन पाता हूं। मैं आपका प्रशंसक ही नहीं बल्कि आपके साहित्य का एक विनम्र पाठक भी हूं। - 18-05-1994

चौथा पत्र

'निर्भय मीरां' के सम्बन्ध में अब तक बहुत सी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं परन्तु जिन महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ आपने इस पुस्तक का सृजन किया है यह अपनेआप में एक ऐतिहासिक कार्य है। अब तक 'मीरां' के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की सूचनाएं हिन्दी साहित्य में मिलती हैं परन्तु प्रामाणिक तथ्यों के अभाव में कोई निश्चित धारणा नहीं बन पाती थी। आपने इस सम्बन्ध में शोध कार्य कर 'निर्भय मीरां' का जो प्रकाशन किया है वह प्रशसनीय ही नहीं अपितु स्तुत्य कार्य भी है।

आपने अपनी महत्त्वपूर्ण कृतियों से हिन्दी को जीवन्त बनाया है। राजस्थान क्षेत्र को आधार बनाकर हिन्दी के भण्डार को समृद्ध किया है। संस्था जो कार्य नहीं कर सकती उससे भी बढ़कर आपने कार्य किया और अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियों को लिखकर हिन्दी-जगत को समर्पित किया है। भारत के आप ऐसे यशस्वी नक्षत्र हैं जिन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण जीवन लोकसाहित्य, लोककलाओं, लोकनाट्यों और हिन्दी के विभिन्न अंगों को समृद्ध करने में लगा दिया है। मैं आपके इस विशाल कृतित्व और व्यक्तित्व के प्रति नतमस्तक हूं। -12-08-1994

पांचवां पत्र

आप लखनऊ आये, यह मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय था। आपके साथ बैठकर आपको एक कप चाय भी नहीं पिला सका, इसका बेहद दु:ख है। मैं वर्षों से आपका और आपके साहित्य का पुजारी रहा हूं। मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि आप कम-से-कम दो दिन मेरे घर रहते तो मुझे भी प्रसन्नता होती और आपका आतिथ्य करने का सुअवसर मिलता। अब उस दिन की प्रतीक्षा में हूं जब आप मेरे घर आकर कुछ दिन ठहरने का अवसर प्रदान करेंगे। आपसे मिलने की इच्छा निरन्तर बढ़ती जा रही है। ऐसा सुअवसर निकट भविष्य में अवश्य आयेगा। -04-11-1994

रिद्धि सिद्धि टीम बनी विजेता

उदयपुर (सुजस)। नारायण सेवा संस्थान एवं रिद्धि सिद्धि क्लब के साझे में कुलदीप की स्मृति में आयोजित राष्ट्रीय शूटिंग वॉलीबॉल प्रतियोगिता में रिद्धि सिद्धि टीम विजेता रही। प्रतियोगिता में चार राज्यों की 16 टीमों ने हिस्सा लिया। नारायण सेवा के अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि विजेता कप्तान सुरेंद्रसिंह एवं टीम को 11,000 और ट्रॉफी, उपविजेता गोधरा को 7,000, तृतीय मध्यप्रदेश को 5,000 एवं चतुर्थ राजस्थान को 2100 रूपये नकद पुरुस्कार दिया गया। बेस्ट शूटर भूरालाल तथा बेस्ट डिफेन्शर बिट्टू रहे जिन्हें 501 रूपये प्रदान किये गये। इस अवसर पर पूर्व भारतीय कप्तान सुरेंद्र सहारण, कृष्णगोपाल, दिलीपसिंह, अभिषेक, नरेंद्रसिंह, मुकेश शर्मा, बबलू मीणा, फतेहलाल मौजूद रहे।

असि-मसि-कसि-कला-संस्कृति.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

केसरियानाथ की आंगी तथा उनके चमत्कार को लेकर कई गीत मिलते हैं। मेलों में दिन-रात राहचलते, झूमते, गाते-नाचते केसरियानाथ की विरूदावली की झड़ी लग जाती है। आदिनाथ का लोहा सबने तो माना-सो-माना पर अंग्रेज राजा तक उसकी मनौती मानने को विवश हुआ है। आदिवासियों का एक गीत है जिसमें डगमगाती नाव देख अंग्रेज राजा कालाजी केसरियाजी को बड़े देव के रूप में याद कर मनौती लेता है। जब उसकी नाव पार लग जाती है तो वह केसरियाजी आकर अपनी मनौती पूरता है तथा चांदी के घोड़े चढ़ाता है।

'भूरेविया राजा। पूरब रे देसां नो है। दरिया वसोवस है। नाव तो नास करे है। भूरियो वसार करे है। कुण मोटे रो देव है। हाथ जोड़ी ने उबोरे। खम्मा घणी खम्मा है। भारी मानता लेवे है। रूपां न घोड़ीला है। नाव तो सालवा लागी है। धूलेव आवा लागी है। घोड़ीला सड़ावे है।'

राजस्थान के शिल्प और स्थापत्य में भी ऋषभदेव की प्रतिमा सर्वोपरि मिलती है। यहां अधिकतया ऋषभदेव तथा पार्श्वनाथ के मन्दिर मिलेंगे। जो मन्दिर ध्वस्त हो रहे हैं उनमें प्रत्येक मन्दिर की विग्रह पट्टिका पर ऋषभदेव-आदिनाथ की प्रतिमा मिलेगी। इससे स्पष्ट है कि धार्मिक कार्यों और विशेष अनुष्ठानों पर सर्वप्रथम सर्वाधिक ऋषभदेव का स्मरण, पूजा-प्रतिष्ठा, शुभ शकुन तथा निर्विघ्न कल्याण रहा है। चित्तौड़गढ़ का सर्वाधिक प्राचीन कीर्तिस्तंभ आदिनाथ को ही समर्पित है। इसके वक्ष भाग में चतुर्दिक आदिनाथ की प्रतिमाओं का उत्कीर्ण प्रत्येक जन को मोह, माया, मान, गुमान आदि का त्याग कर आत्मोद्धार के लिए जिनशासन की ओर प्रवृत्त होने की प्रेरणा देता है।

ऋषभदेव के मन्दिरों के निर्माण और प्रतिष्ठा की कहानियां भी बड़ी दिलचस्प और लोक में शुद्धाचार की प्रतिष्ठा की भावना से अनुप्राणित हैं। जहां भी देखा कि निर्माणाधीन मन्दिर की प्रतिष्ठा शास्त्रानुकूल नहीं हुई है, यतियों ने अपने मंत्रबल से उस मन्दिर को वहां से उड़ाकर कहीं अन्यत्र जा पटका। ऐसे मन्दिर या तो ध्वस्त हो गये या फिर जनविहीन उजाड़ हो गये। नारलाई (पाली) का यशोभद्र मन्दिर, करेड़ा की बाबूड़ी मंगरी पर ध्वस्त ऋषभदेव मन्दिर, गोमाता का जिनालय, पालोद का जिनप्रासाद तथा देलवाड़ा के एकाधिक प्रासाद यतियों के तपोबल की ही करामात बने हुए हैं।

जैनमत में साढ़े चौहत्तर शाह का वर्णन मिलता है। उनमें आकोला (छींपों का, चित्तौड़ जिला) का सूराशाह भी एक बड़ा वरेण्य था। उसने यति हजारी भोजक को अपना सिर काटकर दे दिया। यति ने उन्हें पुन: जीवन दान दिया और कहा कि यदि वह मन्दिर बनावे तो मूर्ति वे ले आयेंगे। जब सूराशाह ने आकोला में जैन मन्दिर बनाया तब प्रतिष्ठा के लिए मूर्ति यति हजारी भोजक कहीं से उड़ा लाया। यह प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की थी। ऐसे ही भैंसड़ाकला (उदयपुर) का भींया या भैंसाशाह बड़ा नामी रहा। उसकी परीक्षा से प्रभावित होकर एक यति आदिनाथ का मन्दिर ही कहीं से उड़ा ले आया जो आज भी मौजूद है। ऐसी मान्यता है कि ऋषभदेव तथा हरण्य गमेशी देवताओं की आराधना से जैन यति मन्दिरों को उड़ाने की विद्या में पारंगत हो जाते थे।

इसी छींपों का आकोला के कवि मोहनलाल ने ऋषभदेव की आराधना में कई छन्द, स्तुतियां लिखीं। इनके लिखे पद ही पचास हजार के करीब इनके सुपुत्र डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' के पास सुरक्षित हैं जो अद्यावधि अप्रकाशित हैं। मोहनजी ने संवत् 2003 में श्रावक बारहखड़ी की रचना की। उसमें ऋषभनाथ के कुछ छन्द वर्णित हैं। नमूने के लिए यह पद दिया जा रहा है-

''ऋषभनाथ ही जग में केवल पद को प्राप्त हुए
उसी के कहे ज्ञान से ही कई मानव फिर मोक्ष गये
जो जन ऋषभनाथ के गुण को अनन्य चित्त से गाता है
मोहन श्रावक वही जन-जन से सीधा मोक्ष सीधाता है।''

मेड़ता के वीरवल कल्लाजी राठौड़ का तो जन्म नाम ही केसरसिंह था। चित्तौड़ के युद्ध में उन्होंने अप्रतिम शौर्य और जो वीरता प्रदर्शित की वह इतिहास का अमर पन्ना ही बन गई। मेवाड़ महाराणा द्वारा टोकरगढ़ का परगना दिये जाने पर कल्लाजी प्रतिदिन ऋषभदेव के दर्शन कर केशर चढ़ाते। ये कल्लाजी चक्रवात युद्ध के धनी थे। इनके द्वारा दोनों हाथों में दो-दो तलवारों द्वारा चारों ओर से दुश्मनों पर वार किया जाता। ऐसे युद्ध लड़ने वाले कल्लाजी अकेले एकमात्र योद्धा हुए। आदिवासियों में भी इनकी मानता अपरम्पार है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राजस्थानी लोक में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की स्तुति में बहुत कुछ लिखा गया है। जितना लिखा गया है उससे अधिक गाया गया है। जितना गाया गया उससे अधिक आत्मसात किया गया है। अपनी समग्र चेतना में यहां का लोक इस देवता को अपने हिये की आंख और आत्मा की पांख देता हुआ अपने चित्त की चांदनी-सा उजलाता रहता है।

जिला कलेक्टर को महात्मा गांधी सेवा पुरस्कार

उदयपुर (सुजस)। गांधी ग्लोबल फेमिली की ओर से 10 मार्च को जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा को महात्मा गांधी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गांधी ग्लोबल फेमिली के उपाध्यक्ष नई दिल्ली एवं अध्यक्ष जम्मू एवं कश्मीर पद्मश्री एस. पी. वर्मा, शहीदे आजम भगतसिंह के भांजे एवं जाने-माने वैज्ञानिक प्रोफेसर जगमोहनसिंह तथा पीस एक्टिविस्ट अब्दुल हामिद ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

पद्मश्री एस. पी. वर्मा ने कहा कि जिला कलेक्टर की सेवाएं उत्कृष्ट रही हैं। उनके प्रयासों से सरकार की योजनाओं का धरातल पर प्रभावी क्रियान्वयन हुआ है तथा पीस मेकिंग को लेकर भी उनके कार्य उल्लेखनीय हैं। वर्मा ने कहा कि कलेक्टर के प्रयासों की बदौलत शांति एवं अहिंसा विभाग के उदयपुर में हुए आयोजन सफल रहे हैं एवं यहां निरंतर प्रशासन का भरपुर सहयोग मिला है।

प्रोफेसर जगमोहनसिंह ने कलेक्टर की कार्यशैली की तारीफ करते हुए कहा कि राष्ट्र स्तरीय कौमी एकता में तीन सौ से अधिक व्यक्ति एकत्रित हुए और इस आयोजन के लिए कलेक्टर द्वारा उत्कृष्ट व्यवस्थाएं की गई। राजस्थान सरकार ने शांति एवं अहिंसा विभाग का गठन किया है जो ऐतिहासिक कदम है। अब्दुल हामिद ने कहा कि कौमी एकता कार्यक्रम के सफल आयोजन से देश-विदेश में अमन का पैगाम पहुंचेगा।

शीतला पूजा

प्रियंका, सरोज जैन, रंजना भानावत, कविता, सुलक्षणा शर्मा

उदयपुर में सप्तमी तथा अष्टमी को शीतला माता की पूजा की गई। बड़े सवेरे महिलाएं अच्छे वस्त्राभूषणों में सज्जित पूजा का थाल सजाये शीतला स्थल पर गईं। पूजा की थाल में मेहंदी, लच्छा, कंकू, हल्दी, चावल, लाल कपड़ा तथा बासोड़ा भोजन-ओल्या अर्थात् दही-मिश्रित चावल, ढोकला चढ़ाया गया।

- सुलक्षणा शर्मा

पचास हजारी मूंछ का बाल

-डॉ. सतीश मेहता -

मूंछ का बाल प्रतिष्ठासूचक तो रहा ही किन्तु उसकी कीमत पचास हजार भी आंकी गई मिलती है। मूंछों का महत्त्व यद्यपि समय के साथ कम होता गया और आज तो मूंछें रखने का प्रचलन ही नहीं रह गया।

विक्रमी संवत् 1701 में नागौर का राजा अमरसिंह राठौड़ वीरगति को प्राप्त हुआ। कठपुतली खेल में इसका खेल अन्तिम खेल रहा। इसी के आधार पर भारतीय लोककला मण्डल में उसके संचालक देवीलाल सामर ने मुगल दरबार नामक खेल की रचना कर 1965 में हुए रूमानिया के तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व कर विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया। तब पहलीबार डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा कठपुतली का खेल जगजाहिर किया गया था।

अमरसिंह के बाद वीरवर बल्लू चांपावत ने अमरसिंह की सेना को संगठित करने के लिए आगरा के एक सेठ से पचास हजार रूपया उधार लिया और बदले में अपनी मूंछ का एक बाल रहन रख दिया। विधि का विधान देखिये, बल्लू चांपावत वीरगति को प्राप्त हो गया जिससे सेठ से उधार लिए पचास हजार बाकी रह गये।

पीढ़ियां बीतने के बाद बल्लू का उत्तराधिकारी हरसोष्ठाव के ठाकुर सुरतानसिंह से बीती घटना का उल्लेख किया तब ठाकुर सुरतानसिंह ने अपनी साख कायम रखते पचास हजार से दोगुनी रकम एक लाख रूपया देकर मूंछ का रहन रखा बाल छुड़वाया।

इस ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख लोक प्रचलित प्रवाद में आज तक सुनने को मिलता है। यह दोहा है-

कमध बल्लू मुख केस, महियत गैणे मेलियो।
सो लीधौ सुरतेस, अेक लाख द्रव आपियो।।

छोटी गणगौर का मेला

शीतला सप्तमी के अवसर पर मोती चोहट्टा में दो दिवसीय छोटी गणगौर का मेला लगा। इस अवसर पर विभिन्न समाज की महिलाएं सजधज कर ईसर, पार्वती और कानूड़ा को पूजा-अर्चना के बाद अपने निवास पर ले जाते हुए।

फोटो - राजेन्द्र हिलोरिया

मटकी से बारिश का अनुमान

होली पर वर्षा होने के अनुमान के लिए होलिका दहन स्थल पर मटकी जमींदोज की परम्परा है। इसके अनुसार गत वर्ष की पानी से भरी लगभग पांच फीट गड्ढे में दबाई मटकी निकाली जाती है। यदि उसमें पानी मिलता है तो अच्छी वर्षा, गीली मिलने पर सामान्य और सूखी मिलने पर अकाल पड़ने की आशंका रहती है। यह परम्परा बीकानेर के गंगाशहर क्षेत्र में है। इस समय सर्व समाज के लोग उपस्थित रहते हैं। उसी समय नई मटकी का पूजन कर पानी से भरकर उसी स्थल पर जमींदोज कर दी जाती है। **-डॉ. कविता मेहता**

तीर्थंकर महावीर

- डॉ. रमेश 'मयंक' -

तीर्थंकर-महावीर
मुझे प्रदान करो
ऊर्जा का अक्षय भंडार
आपकी अनुकम्पा के आलोक से
अनुभूतियां ग्रहण कर सकूं,
मन-बुद्धि-आत्मा के स्तर पर
आपके पथ पर चल सकूं,
मुझमें रहे चाव आपसे जुड़ने का,
और चिन्तन दया करूणा से
आसक्ति की तरफ मुड़ने का।
तीर्थंकर-महावीर
मैं विचार-भाव-कर्मों से धारण करूं
आपके आदर्शों के अनुरूप
मानक व्यापकता
समझ सकूं आपकी दार्शनिक सत्ता,
और कर सकूं पूरी प्रगाढ़ता के साथ
साधक का शरीर से, घृत का स्नेह से,
मधु का मिठास से,
अमृत का रस से रिश्ता।
तीर्थंकर-महावीर
मैं सांसारिक जीव
निर्वहन कर सकूं
कर्म-अनुष्ठान अनुरूप
उत्तम पात्र बनकर अपनी भूमिका
मेरा विश्वास है-
मैं बनकर आपका प्रवक्ता
आपकी कीर्ति की धवल पताका को
पूर्ण समर्पण श्रद्धा निष्ठा के साथ
सुवासित सुमन की सौरभ की तरह
सर्वत्र फैलाने में सफलता पाऊंगा।

कियारा स्लाइस की ब्रैंड एंबैसडर

उदयपुर (ह. सं.)। स्लाइस ने सुपरस्टार कियारा आडवाणी को ब्रैंड एंबैसडर बनाने की घोषणा की है। अनुज गोयल, एसोएिट डायरेक्टर, स्लाइस एंड ट्रॉपिकाना, पेप्सिको इंडिया ने बताया कि इसके साथ ही, ब्रैंड ने अपना नया और मज़ेदार समर कैम्पेन आम का अहसास, सबसे खास भी जारी किया है। स्लाइस द्वारा कियारा को ब्रैंड एंबैसडर बनाने का मकसद अपने ग्राहकों के साथ जुड़ाव को और मजबूत करना और साथ ही, देशभर में इस आम-प्रेमियों के पसंदीदा ड्रिंक के तौर पर और लोकप्रिय बनाना है।

आजीवन हिन्दी के लिए समर्पित रहे डॉ. वैदिक

डॉ. वेदप्रताप 'वैदिक' का अपने निवास दिल्ली में 14 मार्च 2023 को निधन हो गया। वे आजीवन हिन्दी को मौलिक चिन्तन की भाषा बनाने और भारतीय भाषाओं में उसे सम्मानजनक प्रतिष्ठा दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहे।

वे रुसी, फारसी, जर्मन और संस्कृत के जानकार थे। उन्होंने अपनी पीएच.डी. के शोधकार्य के दौरान न्यूयार्क की कोलंबिया युनिवर्सिटी, मास्को के 'इंस्तीतूते नरोदोव आजी', लंदन के 'स्कूल ऑफ ओरिंयटल एंड एफ्रीकन स्टडीज़' और अफगानिस्तान के काबुल विश्वविद्यालय में अध्ययन और शोध किया। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के 'स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज' से अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वे भारत के ऐसे पहले विद्वान थे जिन्होंने अपना अंतरराष्ट्रीय राजनीति का शोध-ग्रंथ हिन्दी में लिखा। इस पर उनका निष्कासन राष्ट्रीय मुद्दा बना। यहां तक कि संसद भी हिल गई।

वैदिकजी ने 13 वर्ष की आयु में जेल-यात्रा भोगी। हिन्दी सत्याग्रही के तौर पर वे 1957 में पटियाला जेल में रहे। फिर तो छात्रनेता और भाषाई आन्दोलनकारी के तौर पर उन्होंने कई जेल यात्राएं कीं। वे पीटीआई भाषा के संस्थापक-सम्पादक और उसके पहले नवभारत टाइम्स के सम्पादक रहे। लगभग 200 समाचारपत्रों में भारतीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर उनके लेख हर सप्ताह प्रकाशित होते रहे। शब्द रंजन में भी वे यदा-कदा अपने आलेख भेजते रहे और लगातार सम्पर्क में रहे।

सन् 2018 में डॉ. वैदिक एक दिवसीय यात्रा पर उदयपुर आये तब हमारे निवास पर आकर उन्होंने चाय नाश्ता किया। लगभग घण्टे भर उनके साथ हमारी विश्व भर में भारतीयता की पहचान और भविष्य के भारत पर सारगर्भित बातचीत होती रही। विदा के वक्त डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा उन्हें कावड़ भेंट की गई जिसे उन्होंने अपनी अन्यतम उपलब्धि बताया। शब्द रंजन के प्रकाशन के लिए सम्पादिका रंजना की पीठ थपथपाई।

- डॉ. तुक्तक भानावत

पलाश के प्रति

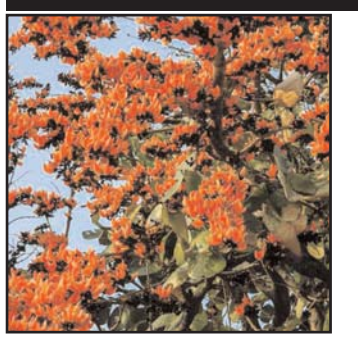

ओ तापस तरु
पत्र-विहीन, पुष्पित पलाश!
अनावृत, अरूणिम, अनिंद्य रूप
वन प्रान्तर में एकाकी सुषमा अनूप!
गिर गये पत्र सब, झर जाते
तरुण तपस्वी के मोह बंध,
निष्काम गोतम सी तप:पूत
निर्मल छवि निखरी निर्गंध!
या योगी की प्रकर्ष प्रभामय,
अन्तश्चेतना निर्वसना,
पार ब्रह्म के मुक्त मिलन को
ऊर्ध्व-मुखी आतुर मना!
या कि निज दाह से दहक कर
उद्भूत उज्वल फिनिक्स सम
निर्मल, निभ्रन्ति
यह ज्वलंत सौन्दर्य कान्त!

फिनिक्स :

प्राचीन मिस्र देश की कथाओं में वर्णित परम पवित्रता का प्रतीक एक ऐसा पक्षी जो एक समय में एक ही ऊंचे आसमान में विचरता है और एक हजार वर्ष तक जीवित रहने के बाद जब नीचे गिरता है तो बीच रास्ते उसका शरीर प्रज्वलित होकर नये फिनिक्स को जन्म देता है, जो पुन: आकाश में उड़ जाता है।

-धनेशचन्द्र भाणावत

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।